राष्ट्र निर्माण में महिलाओं का योगदान : संदर्भ मौलाना आज़ाद

मौलाना अबुल कलाम आज़ाद
अंतराष्ट्रीय निबंध प्रतियोगिता

(पुरस्कृत निबंध 2002)

भारतीय सांस्कृतिक सम्बन्ध परिषद्

राष्ट्र निर्माण में महिलाओं का योगदान : संदर्भ मौलाना आज़ाद

प्रकाशक :
राकेश कुमार
महानिदेशक
भारतीय सांस्कृतिक सम्बन्ध परिषद्
आज़ाद भवन, इन्द्रप्रस्थ एस्टेट
नई दिल्ली - 110002

मुद्रक :
सीता फाइन आर्ट्स प्रा. लि.,
ए-22, नारायणा इडस्ट्रियल एरिया,
फेज़-2, दिल्ली-110 028
दूरभाष : 011-51418880, 25896999
ई-मेल *printer@vsnl com*

प्रकाशकीय

मौलाना अबुल कलाम आज़ाद भारतीय स्वतत्रता के प्रमुख वास्तुकारो में से एक थे। स्वतंत्र भारत के प्रथम शिक्षा मत्री के रूप में उन्होंने आधुनिक भारत की नींव रखी। मौलाना की कल्पनाशक्ति और दूरदर्शिता ने राष्ट्र को उदारवादी और प्रगतिशील शिक्षा नीति दी, जिसने राष्ट्र को उभरती चुनौतियो और उत्तरदायित्वों के प्रति अर्थपूर्ण रूप से क्रियाशील बनाया।

एक अन्य क्षेत्र जिसमे मौलाना का स्थायी योगदान है, वह है दूसरे देशो के साथ निकट सांस्कृतिक संबंधों की स्थापना के महत्व को पहचानना और उसे प्रमुखता देना। मौलाना आज़ाद वार्षिक निबंध प्रतियोगिता का उद्देश्य लोगों को मौलाना के आदर्श और दर्शन को जानने और समझने का अवसर प्रदान करना ही है।

मै इस निबंध प्रतियोगिता के सभी प्रतिभागियो और इसके निर्णायक के रूप मे शामिल प्रतिष्ठित व्यक्तियों के प्रति अपनी हार्दिक कृत्तज्ञता व्यक्त करना चाहता हूँ।

इन सफल निबंधों के संकलन को आपके आनन्ददायक पठन के लिए पुस्तक रूप मे प्रकाशित करने मे, मै हार्दिक प्रसन्नता का अनुभव कर रहा हूँ।

राकेश कुमार

(राकेश कुमार)
महानिदेशक
भारतीय सास्कृतिक सबंध परिषद्

पृष्ठभूमि

जब तत्कालीन नागर विमानन मत्री श्री हुमायूँ कबीर ने 11 मार्च 1968 को भारतीय सास्कृतिक सम्बन्ध परिषद् को मौलाना अबुल कलाम आज़ाद की *इडिया विन्स फ्रीडम* की पाण्डुलिपि भेट की तो उन्होंने अनुरोध किया कि इसके प्रकाशन से जो आय हो, उसका उपयोग मौलाना आज़ाद पुरस्कार निधि बनाने के लिए किया जाए। इससे प्राप्त ब्याज का उपयोग दो वार्षिक पुरस्कार प्रदान करने के लिए किया जाए; पहला एक ग़ैर–मुसलमान भारतीय नागरिक को इस्लाम पर अग्रेज़ी में लिखित सर्वोत्कृष्ट निबध के लिए और दूसरा एक भारतीय मुसलमान नागरिक को 'हिन्दू धर्म' पर अंग्रेज़ी मे लिखित सर्वोत्कृष्ट निबध के लिए। इन छोटी शुरुआतो से, प्रथम शिक्षा मत्री और भारतीय सांस्कृतिक सम्बन्ध परिषद् के सस्थापक अध्यक्ष मौलाना अबुल कलाम आज़ाद की जन्म शतवार्षिकी के अवसर पर, 1989 मे निबध प्रतियोगिता का शुभारम्भ किया गया।

इस प्रतियोगिता मे भारत और अन्य दक्षेश देशो के 30 वर्ष से कम वय के नागरिक भाग ले सकते है। निबधों के विषय मौलाना आज़ाद के जीवन, उनके चिन्तन और आदर्शों से सम्बन्धित होते हैं। पुरस्कार के रूप मे धनराशि और प्रशस्तिपत्र प्रदान किया जाता है। पुरस्कार किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति द्वारा भारतीय सास्कृतिक सम्बन्ध परिषद् द्वारा आयोजित एक विशेष समारोह मे प्रदान किए जाते है।

यह निर्णय लिया गया कि 1990 से यह प्रतियोगिता तीन भाषाओ मे हो—हिन्दी, उर्दू और अग्रेज़ी, लेकिन प्रतियोगिता के विषय तीन भाषाओ मे समान रखे जाएँ।

1994-95 से इन तीन भाषाओ मे प्रतियोगिता के लिए विषयों का एक व्यापक क्षेत्र रखा गया।

2002 के लिए इस निबंध प्रतियोगिता के विषय इस प्रकार थे .

हिन्दी : राष्ट्र निर्माण मे महिलाओ का योगदान . सदर्भ मौलाना आज़ाद

उर्दू : मौलाना आज़ाद की नज़रों मे इस्लाम का पैगाम-ए-अमन-ओ-आशिती

अंग्रेज़ी . द इम्पैक्ट ऑफ टेक्नोलोजी ऑन सोसाइटी

अरेबीक : इंडियन एज ए कराडिल आफ रिलिजियनस : वीद स्पेशल रिफेरंस टू मौलाना आज़ाद राईटिग

2002 की निबध प्रतियोगिता के लिए कुल बाईस पुरस्कार विजेता हैं जिनमें नेपाल, सउदी अरवीया, ग्याना, म्यानमार, सूरीनाम से एक-एक है।

अनुक्रम

राष्ट्र निर्माण में महिलाओ का योगदान · संदर्भ मौलाना आज़ाद

राष्ट्र निर्माण में महिलाओं का योगदान : संदर्भ मौलाना आज़ाद

अंजनी शर्मा

प्रस्तावना—

ऋगवेद मे नारी की महत्ता के संबंध मे कहा गया है—

"उपाध्यायान् दश आचार्यः,
शताचार्यान् तथा पिता,
सहस्त्रं तु पितन् माता,
गौरवेण अति रिच्यते।"

"अर्थात दस उपाध्यायों से बढ़कर आचार्य, सौ आचार्यो से बढ़कर पिता, हजार पिताओं से बढ़कर माता– गौरव में, गुरूत्व में, आदरणीयता में भी और बालकों के जीवन में आदिम वर्षों की शिक्षकता में भी होती है।"

वस्तुत· बालक ही भावी राष्ट्र के निर्माता होते हैं और उनमें संस्कारों का प्रवहन मातृशक्ति द्वारा ही होता है। इस दृष्टि से देखें तो राष्ट्र निर्माण में महिलाओ की भूमिका महत्वपूर्ण हो जाती है। यदि महिला अपनी संतान मे अच्छे संस्कार डालती है व सुदृढ़ चरित्र का निर्माण करती है तो राष्ट्र की नीव मजबूत होती है और यह आधी जनसख्या, शेष पूरी जनसंख्या की धुरी होती है। अतएव स्वाभाविक ही है कि राष्ट्र निर्माण मे महिलाओं की भूमिका विशेष महत्व की होती है।

और जहां तक मौलाना अबुल कलाम आज़ाद की बात है, कहा जा सकता है–

"मत सहल हमें जानो,
फिरता है फ़लक बरसो।
तब खाक के परदे से,
इंसान निकलते हैं।"

उक्त पक्तियॉ इस्लामी संस्कृति की श्रेष्ठतम देन मौलाना अबुल कलाम आज़ाद के लिए ही मानो लिखी गई है। विद्वान, बहुमुखी प्रतिभा सपन्न, अति उत्साही, समाज-सुधारक, पत्रकार के रूप में सुमेधत्व से उभरी उनकी सोच न केवल भारत की स्वतत्रता प्राप्ति, वरन् राष्ट्र के नवनिर्माण में भी अमूल्य निधि है।

राष्ट्र निर्माण मे महिलओ का योगदान यदि मौलाना साहब के सदर्भ मे देखें तो उनकी यही विचारधारा और मान्यता रही है कि महिलाएँ किसी भी राष्ट्र के निर्माण की धुरी मे बसती है। यदि महिलाएँ समर्थ है तो राष्ट्र की जड़े मजबूत होती हैं। राष्ट्र निर्माण के लिए महिलाओं को शक्ति सम्पन्न बनाना आवश्यक है। आधुनिक युग की इस महान विभूति ने जनचेतना पर राष्ट्र निर्माण की दस्तक दी–स्त्री शिक्षा व जागरण के माध्यम से। इस दस्तक से भारतीय स्त्रियों की सोई हुई चेतना झंकृत हो उठी।

किसी राष्ट्र के निर्माण के मुख्य तत्व है–राष्ट्रीयता की भावना, आपसी सद्भाव व एकता की भावना, स्वस्थ समाज, शिक्षा आदि।

देखा जाए तो राष्ट्र निर्माण में नारी के योगदान का न तो कोई निश्चित स्रोत है न ही विकास का निश्चित क्रम। इस योगदान ने ऊबड़-खाबड़, ऊपजाऊ, बंजर हर तरह की परिस्थिति का सामना करके राष्ट्र को प्रगति की दिशा में आगे बढ़ाया है।

राष्ट्र निर्माण में महिलाओं का योगदान–ऐतिहासिक पृष्ठभूमि : संदर्भ मौलाना आज़ाद

राष्ट्र निर्माण में महिलाओ के योगदान की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि में विवेचना करने के लिए विभिन्न युगो में महिलाओं की भूमिका को जाचना-परखना होगा।

वैदिक काल में महिलाओं की भूमिका

इस काल मे महिलाओ का सर्वागीण सामाजिक जीवन होने से स्वाभाविक ही राष्ट्र निर्माण मे भी उनकी भागीदारी सुनिश्चित थी। इस कालखण्ड में विश्वपारा और लोपामुद्रा के नाम सुनाई देते है जिन्होंने वैदिक ऋचाओ की रचना की थी। महिला ऋषियो ने वेद के कतिपय सूक्त भी बनाए है—यथा—रोमशा, ब्रह्मवादिनी, लोपामुद्रा, विश्वपारा, आत्रेयी, शाश्वती आगिरसी, अपाला, आत्रेयी, श्रद्धा, कामायनी, प्रभृति। वाल्मिकी ने रामायण मे लिखा है कि रामचद्रजी की माता कौशल्यादेवी, दैनदिनी अग्निहोत्र मे स्वय वेद मन्त्रों का उच्चारण करके आहुति देती थी। उपनिषदो व महाभारत काल मे भी कई ब्रह्मवादिनी स्त्रियों के नाम आए है। चूकि समाज मे उन्हे प्रतिष्ठित स्थान प्राप्त था तथा वे शिक्षित होती थी, अतएव राष्ट्र को दिशा दर्शन देने में वे आगे रहती थी।

उत्तर वैदिककाल में महिलाओं की राष्ट्र निर्माण में भूमिका

उत्तर वैदिक काल ईसा से 600 वर्ष पूर्व से लेकर ईसा से 300 वर्ष बाद तक का माना जाता है। इस काल मे महाभारत की रचना हुई। महाभारत के उद्धरणों से जानकारी प्राप्त होती है कि इस काल मे भी स्त्रियॉ राष्ट्र निर्माण मे भागीदारी करती थी, परंतु यह काल संक्राति काल था जिसमे धीरे-धीरे बौद्ध और जैन धर्म के प्रभाव मे वृद्धि होने के साथ-साथ महिलाओ ने भी अपनी विद्या, बुद्धि, विद्वता और त्याग से राष्ट निर्माण के इतिहास मे चार चॉद लगाये, परन्तु बौद्ध संस्कृति के अवसान के साथ-साथ महिलाओं की कीर्ति भी धुंधली होती गई।

सदियॉ इस राजनीतिक और सामाजिक खंडहरो के ऊपर से निकल गईं और अपने पीछे दकियानूसी अज्ञान की परत हमारे ऊपर छोड़ती गई। सदियो तक भारतीय महिलाएँ रूढ़ि और परंपरा के इस सड़े-गले कचरे के नीचे फौलादी रिवाजो की जजीरो से जकड़ी पड़ी थी। धर्मशास्त्र काल व मध्यकाल में यही हुआ।

धर्मशास्त्रकाल व मध्यकाल में राष्ट्र निर्माण में महिलाओं का योगदान

यह युग तीसरी शताब्दी से लेकर ग्यारवीं शताब्दी के पूर्वाध तक का माना जाता है। इस काल में मनुस्मृति की संकीर्ण विचारधारा की शिकार होकर महिलाएँ राष्ट्र निर्माण करना तो दूर स्वय ही दासता की स्थिति में आ गई। उन्हें वस्तु मानकर उपयोग मे लाने भर के लिए समझा गया। इस काल में राष्ट्र निर्माण मे उनका कोई योगदान नहीं हो पाया।

मध्यकाल 16 वीं शताब्दी से 18 वी शताब्दी तक का माना जाता है। मध्यकाल में तो स्थिति और भी बदतर हो गई। जो बाते धर्मशास्त्र काल मे सैद्धातिक रूप मे थी वे ही मध्यकाल मे व्यावहारिक रूप से आकार ग्रहण करने लगीं।

यह वह काल था जिसमे स्वय के पुर्ननिर्माण के लिए महिलाएँ राष्ट्र का मुँह ताक रही थी। बाल-विवाह, सतीप्रथा, पर्दा प्रथा, बहुविवाह, महिलाओ की शारीरिक व मानसिक प्रताड़ना के काले अध्याय लिखे जाने लगे। उन्हें सभी अधिकारो से वंचित कर प्रभावहीन बना दिया गया जिसका प्रभाव समूचे राष्ट्र पर दिखाई देने लगा। महिलाओं को यह अधिकार विहीनता, प्रभाहीनता राष्ट्र के ग्रहण की भांति लग गई और राष्ट्र को परतत्रता की त्रासदी से गुजरना पड़ा। अठारहवी शताब्दी के अंतिम वर्षो में राष्ट्र में अंग्रेजी शासन काल शुरू हुआ।

परतंत्रता की त्रासदी से स्वतंत्रता संग्राम तक की यात्रा : संदर्भ मौलाना आज़ाद

ब्रिटिश काल मे महिलाओ की निर्योग्यताओं मे बीसवी शताब्दी के उत्तरार्द्ध तक कोई परिवर्तन नहीं हुआ क्योकि महिलाओ का शोषित बने रहना अंग्रेजों के हित पूर्ति की दृष्टि से भी लाभप्रद था।

परतु ..

इस मुर्दनी में यकायक भूकंप की गड़गड़ाहट आई जिसने फौलादी बंधनो को चकनाचूर कर दिया और भारतीय महिलाएँ प्राणदायक स्वस्थ वायु में सांस लेती हुई दिखाई देने लगी।

सदियो की परंपराओ पर हथौड़ा चलाकर दबी हुई आकांक्षाओ को नवीन रूप देने का काम कोई क्रांतिकारी ही कर सकता था और ये क्रातिकारी थे—मौलाना आज़ाद।

मौलाना आज़ाद ने महिलाओ की स्थिति में सुधार सबंधी कार्यो को अपने आंदोलन का प्रमुख अंग बना लिया। उन्होने महिलाओ की निद्रा तोड़कर उन्हें राष्ट्रीय आदोलन में भाग लेने के लिए प्रेरित किया जिसके फलस्वरूप महिलाएँ घर की चारदीवारी से बाहर निकलकर, परपराओ के बधन तोड़कर स्वतत्रता आदोलन मे कूद पड़ीं।

इसके पश्चात महिला जागरण का अभूतपूर्व दृश्य स्वतत्रता आदोलन मे दिखाई दिया। हजारों—लाखों महिलाएँ घरो की ममता छोड़कर आज़ादी की लड़ाई मे कूद पड़ी। जो महिलाएँ कभी चौके चूल्हे से बाहर नही निकली थी, जिन महिलाओ ने जानानाखाने की बद रोशनी के बाहर कभी कदम नहीं रखा था, जो शायद ही कभी आम रास्तो पर चली थी, प्राचीन रूढ़ियो और रिवाजो मे फंसी हुई महिलाएँ, शर्मिली और विनम्र महिलाएँ जो घूघट हटाने की बात तक नही सोच सकती थीं, पुरानी मर्यादाओ पर विश्वास रखनेवाली बूढ़ी स्त्रियां—सबकी सब शक्ति और साहस लेकर अपार जनसमुद्र मे कूद पड़ी। वे गर्व से ऊंचा मस्तक करके चलने लगी और अपनी एड़ी से जुल्म और गुलामी के दानव को कुचलने लगी। अनपढ़ महिलाएँ भी जगह-जगह युद्ध समितियो का सचालन करती थी, दुर्बल होते हुए भी वे आंदोलनकारियो के बड़े-बड़े जत्थों की कप्तानी करती थी। वे हर खतरे का दृढ़तापूर्वक समाना करने के लिए तत्पर रहती थी।

उन्होने पुलिस और उसकी लाठियो का सामना किया। धूप और वर्षा में बैठकर पिकेटिंग की। जेल के सीखचों के भीतर कारावास के दिन काटे। इस तरह सदियो की दबी हुई और सताई हुई भारतीय महिलाओ ने अपनी अभूतपूर्व शक्ति और कुर्बानी से सारी दुनिया को विस्मित और चकित कर दिया। गाव की स्त्रियो ने तो और अधिक वीरता दिखाई। वे टीके लगाकर अपने बेटे-बेटियो, पोते-पोतियो को आदोलन के लिए भेजती थी।

वास्तविकता तो यह है कि मौलाना आज़ाद के सदेशों ने महिलाओ को उनकी शक्ति और सामर्थ्य पहचानने मे महत्वपूर्ण योगदान दिया। महिलाओं में एक नवीन चेतना का विकास हुआ। और यही चेतना बाद मे उनकी प्रगति का आधार बनी।

महिला शिक्षा और राष्ट्र निर्माण : संदर्भ मौलाना आज़ाद

हमारे पुरातन ग्रंथ उपनिषदों में सरस्वती की वदना करते हुए कहा गया है—

"विद्या· समस्ताः तब देवि, भेदा·,
स्त्रिय. समस्ताः सकलः जगत्सुः,
त्वया एकया पूरितं अंबा एतत.
का ते स्तुतिः स्तव्य परा परोक्ति.।"

हे देवि! सब विद्या, सब कला और सब स्त्रिया आपकी ही विभूतियां है, आपसे जगत व्याप्त है, स्तुति तो तब की जाती है जब स्तव्य से स्त्रोता और स्त्रोत भिन्न हो, परतु जब आप ही सब कुछ हो और आपसे भिन्न कुछ है ही नही तो किसकी स्तुति कौन करे ?

इसका अभिप्राय है कि सभी महिलाएँ साक्षात सरस्वती का अवतार है, जो राष्ट्र को मार्गदर्शन प्रदान करने में पूर्णतया समर्थ है। महिलाओ की इसी प्रतिभा को जानते-समझते हुए मौलाना आज़ाद ने एक अवसर पर कहा था—

> **"लड़कियों को अपने भविष्य के बारे में स्वयं चुनाव करने का अवसर जरूर दिया जाना चाहिए और यदि वे कोई विशेष व्यवसाय चुनना चाहती हैं तो केवल व्यक्तिगत योग्यता बढ़ाने और नाम कमाने के लिए नहीं वरन् उसके माध्यम से राष्ट्र का निर्माण करने के लिए उस व्यवसाय को चुनने का लक्ष्य रखना चाहिए।...राष्ट्र युवा लड़कियों को डॉक्टर आदि बनाने पर अत्यधिक धनराशि खर्च करता है। इसलिए उन्हें डॉक्टरी को व्यवसाय के तौर पर अपनाने की अनुमति अवश्य देना चाहिए ताकि उनकी प्रतिभा और प्रशिक्षण व्यर्थ न जाए। लड़कियां विवाह के बाद अपना व्यवसाय छोड़ देती हैं और गृहिणी बन जाती हैं। यह ठीक नहीं है।"**

इससे स्पष्ट है कि मौलाना आज़ाद महिलाओं की शिक्षा को लेकर प्रगतिशील धारणा रखते थे और सदैव राष्ट्र की प्रगति और खुशहाली के बारे मे सोचते थे।

महिलाओं की चेतनाहीनता का दुष्प्रभाव : परतंत्रता

यद्यपि वैदिक व उत्तर वैदिक काल मे भारतीय महिलाएँ अपनी विद्या, बुद्धि, विद्वता और त्याग से राष्ट्र निर्माण मे अभूतपूर्व योगदान दे रही थी, परंतु धर्मशास्त्र काल से सामाजिक व धार्मिक सकीर्णता आरभ हो गई। मध्यकाल तक आते-आते मनुस्मृति को ही व्यवहार की कसौटी मान लिया गया और राष्ट्र को शक्ति प्रदायिनी स्त्री अब निर्बलता का प्रतीक बन गई। अपने प्रदीप्त व्यक्तित्व द्वारा समूचे राष्ट्र को मार्गदर्शन देने वाली स्त्री इस काल मे परतंत्र, पराधीप, नि:स्सहाय ओर निर्बल बन

गई थी। उसकी सारी स्वतत्रताओ पर प्रतिबन्द लगाकर उसे आजीवन पुरुष के अधीन बना दिया गया।

महिलाओ को सारे अधिकारों से वचित कर चेतनाहीन बना देने का प्रभाव समूचे राष्ट्र पर दिखाई देने लगा। महिलाओ की चेतनाहीनता राष्ट्र निर्माण में ग्रहण की तरह लगी और देश गुलामी की जंजीरो मे जकड़ दिया गया।

महिलाओं में शिक्षा के प्रति जागरूकता उत्पन्न करने हेतु मौलाना आज़ाद के प्रयास

मौलाना आज़ाद ने गुलामी की जजीरो को काटने के लिए शिक्षा व जागरूकता की कैंची को पैना करने पर जोर दिया। वे मानते थे कि भारतीय महिलाओ को ज्ञान प्राप्ति से वंचित रखना पूरे राष्ट्र के प्रति क्रूरता है। इसके लिए उन्होने मनुस्मृति को मुख्य कारण माना और वे भारतीय महिलाओं को राष्ट्र निर्माण की दिशा मे पुन· प्रतिष्ठित करने के अभियान मे जुट गए।

भारतीय महिलाओं को सम्मानजनक स्थान दिलाने के लिए उन्होने शिक्षा को महत्वपूर्ण सोपान माना। उनके समग्र प्रयत्नों का उद्‌देश्य महिलाओ को उपेक्षिता के दलदल से निकालकर गरिमामाय स्थान प्रदान कर समूचे राष्ट्र निर्माण को दिशा-दर्शन देने में महिलाओं की भूमिका को पुन स्थापित करना था।

मौलाना आज़ाद शिक्षा को, महिलाओं को हर प्रकार से समर्थ बनाने का बेहतर उपाय मानते थे। शिक्षित महिलाओं की राष्ट्रनिर्माण में अहम भूमिका होती है। वे स्वय ही अपने सुधारों के लिए प्रयासरत होती हैं और अपनी समस्याएँ अपने ढंग से सुलझाने के लिए राष्ट्र निर्माण की समस्याओं के निराकरण में भी अपनी बुद्धि तथा विवेकशीलता का परिचय देती है।

मौलाना आज़ाद मानते थे कि एक शिक्षित महिला जागरूक होने के साथ आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर भी हो पाती है क्योंकि शिक्षा महिला को स्वावलंबी बनाने के अतिरिक्त उसमें सोचने-समझने और जागरूक बनकर जीने की क्षमता का विकास करती है, तब वह राष्ट्र निर्माण मे अपना उत्कृष्ट योगदान प्रदान करती है।

एक शिक्षित महिला अपने संतुलित व्यक्तित्व के माध्यम से राष्ट्र को दिशा प्रदान करती है। अपने उच्च मनोबल, अदम्य साहस और दृढ़ता से वह राष्ट्र को भी जागरूक करती है और एक जागरूक राष्ट्र ही विकास कर सकता है।

शिक्षा मंत्री के रूप मे मौलाना आज़ाद

स्वतंत्र भारत के शिक्षा मत्री के रूप मे उन्होने भविष्य की शिक्षा की अनेक योजनाएँ बनाई और देश में विभिन्न सभावनाओं की परिकल्पना की। उनका कहना था–

> **"आज भारत स्वतंत्र है, इसे जैसा भी चाहें, उसी प्रकार के दिमागी ढांचे में ढाला जा सकता है। देश की प्रगति में संकुचित दृष्टिकोण ही सबसे बड़ी रूकावट है। यह संकुचितता महिलाओ को पीछे छोड़ देती है जो राष्ट्र निर्माण में एक बड़ी बाधा है। हमारा कर्तव्य है कि आज़ादी के नए युग में हम इस बुराई से दूर रहें।"**

मौलाना आज़ाद ऐसी शिक्षा की परिकल्पना करते थे जो चरित्र निर्माण कर सके और इसके लिए उन्होंने शिक्षा मत्री के रूप मे महिला शिक्षा केद्रो की स्थापना की व पुराने केंद्रो का विकास किया। एक महत्वपूर्ण आयोग, विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग सन् 1948 में व माध्यमिक शिक्षा आयोग सन् 1952 मे स्थापित किए। उनके ही प्रयत्नों के परिणामस्वरूप विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की स्थापना हुई। उन्होने शिक्षा मंत्री के रूप में बुनियादी शिक्षा और प्रौढ़ शिक्षा को भी महत्वपूर्ण स्थान दिया और संबंधित योजनाओ का निर्माण किया।

शिक्षा मंत्री के रूप मे दिए गए मौलाना आज़ाद के भाषणो से महिला शिक्षा के प्रति उनके दृष्टिकोण की जानकारी मिलती है। मौलाना का पारिवारिक परिवेश भी शिक्षा से जुड़ा हुआ था। उनके पिता विद्वान और धर्मशास्त्र में पारगत थे। माता भी मक्का के विद्वान परिवार से थी। उनकी पत्नी जुलेखा बेगम उर्दू और फारसी की जानकार थी। मौलाना आज़ाद ने भी उन्हें पुस्तकें पढ़ने और ज्ञानवर्धन के लिए प्रेरित किया।

मौलाना आज़ाद चाहते थे कि महिलाएँ शिक्षा के माध्यम से उच्च मानसिक स्तर प्राप्त करें ताकि राष्ट्र निर्माण में उनकी निर्णायक भूमिका हो। हर आम महिला

भी बुद्धिजीवी वर्ग की तरह सोचे और निर्णय ले। मौलाना के विचार में महिलाओ को शिक्षित बनाने का अभिप्राय है सपूर्ण राष्ट्र की इमारत को मजबूत बनाना। यदि राष्ट्र में महिलाओ की स्थिति कमजोर होगी तो यह नीव के आधे पत्थरों के कमजोर होने की भांति होगी। इसी कारण उन्होने महिलाओं को शिक्षित बनाने पर विशेष जोर दिया।

मौलाना आज़ाद एक ऐसे राष्ट्र का निर्माण करना चाहते थे जो अधविश्वास, रूढ़िवादिता और धर्माधता से मुक्त हो, ऐसे राष्ट्र का निर्माण शिक्षित महिलाएँ ही कर सकती है। वे मानते थे कि महिला शिक्षा और राष्ट्र निर्माण दोनो एक-दूसरे के पूरक है। एक के कमजोर होने पर दूसरे पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। महिला शिक्षा के अभाव में स्वस्थ राष्ट्र के निर्माण की कल्पना भी नही की जा सकती है।

तुर्जमान-उल-कुरान मे मौलाना आज़ाद ने लिखा है—

> **"यह प्रकृति का विधान है कि यदि आप आंखें नहीं खोलते तो वे ढकी रहेंगी और आपको अंधेरा ही अंधेरा लगेगा। यदि आप कानों का इस्तेमाल नहीं करते तो आप भी बहरे व्यक्ति के समान हो जाएगें और यदि आप चिंतन नहीं करेंगे तो आपकी विवेक शक्ति मंद पड़ जाएगी।"** इसलिए महिलाओं की ऑखे खोलकर उन्हे जागरूक बनाकर स्वस्थ राष्ट्र का निर्माण करने के लिए मौलाना आज़ाद सदैव प्रयत्नशील रहे।

राष्ट्र निर्माण में पारस्परिक सद्‌भाव का महत्व और महिलाएँ : संदर्भ मौलाना आज़ाद

भारत जैसे देश मे जहां विभिन्न धर्म, संप्रदाय, भाषा, जाति के नागरिक रहते है, परस्पर सद्‌भाव बनाए रखना राष्ट्र निर्माण का एक महत्त्वपूर्ण सोपान है। परस्पर सद्‌भाव जागृत करने मे महिलाओ की भूमिका महत्वपूर्ण है जिसे अनदेखा नही किया जा सकता है। सद्‌भावना के अकुरों का बीजारोपण मातृशक्ति के द्वारा ही होता है।

साम्प्रदायिक सद्‌भाव और महिलाएँ

मौलाना आज़ाद के विचार में राष्ट्र निर्माण मे साम्प्रदायिक तनाव एक बड़ी बाधा है जो भविष्य के भारत को भी प्रभावित कर सकती है। इस तनाव को दूर करने और परस्पर सद्‌भावना के विकास में महिलाओं की विशेष भूमिका होती है क्योकि बच्चो में सस्कारो के माध्यम से इसकी नीव महिला द्वारा ही रखी जाती है। इस माध्यम से महिलाएँ राष्ट्र निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह कर सकती हैं।

भारतीय मुस्लिमों को साम्प्रदायिकता की भावना से ऊपर उठाने के लिए मौलाना आज़ाद ने भारतीय मुस्लिम राष्ट्रवादी दल की स्थापना की। इस दल के माध्यम से मौलाना आज़ाद राष्ट्र निर्माण मे बहुसंख्यको और अल्पसंख्यकों के बीच तनावपूर्ण संबंधों को समाप्त कर मैत्री भाव स्थापित करना चाहते थे। उन्होंने मुस्लिम महिलाओं से भी इस आदोलन मे भाग लेने की अपील की।

धार्मिक सद्‌भाव

मौलाना आज़ाद राष्ट्र निर्माण हेतु भारत को धर्म निरपेक्ष बनाए रखने के समर्थक थे। उनकी मान्यता थी कि राष्ट्र का निर्माण सभी धर्मो की शक्तियो को एकीकृत करने से संभव है। भारत को एक सुसंगठित राष्ट्र बनाने के लिए विभिन्न धर्मो का सामंजस्य स्थापित करने की नितात आवश्यकता है और विभिन्न धर्मों में सामजस्य स्थापित करने की भावना परिवारजनों, खासकर बच्चो मे डालने मे महिलाओं का विशेष योगदान है। बालक जब जन्म लेता है तब वह किसी भी धर्म का नही होता है, उसमे धार्मिक संस्कार माता ही डालती है। उस समय कट्टरता के स्थान पर उदारता, सहिष्णुता और मानवता के धर्म का बीजारोपण कर महिलाएँ स्वस्थ एव उन्नत राष्ट्र का निर्माण कर सकती है। इसी आधार पर मौलाना आज़ाद राष्ट्र निर्माण मे महिलाओं से महत्वपूर्ण योगदान की अपेक्षा रखते थे।

मौलाना की अपील

मौलाना आज़ाद द्वारा सन् 1912 में प्रारभ किए गए उर्दू साप्ताहिक 'अल-हिलाल' मे राष्ट्र निर्माण तथा विकास के लिए महिलाओ से विशेष अपील की

गई कि वे राष्ट्रीय आंदोलन मे पुरुषों के कंधे से कधा मिलाकर योगदान दे। देश प्रेम से ओतप्रोत इस साप्ताहिक ने महिलाओ मे वैचारिक परिवर्तन लाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। इसमे प्रकाशित लेखों के माध्यम से महिलाओ मे राष्ट्र निर्माण मे अपनी भूमिका के महत्व के प्रति जागरूकता आई। शिक्षित महिलाओ मे तो यह अखबार विशेष रूप से लोकप्रिय हुआ।

'अल-हिलाल' से, विशेषकर महिलाओं में फैली सामाजिक जाकरूकता ने ब्रिटिश साम्राज्य की नीद हराम कर दी और उसने इस अखबार की प्रेस को जब्त कर लिया, परतु मौलाना आज़ाद इससे निराश नही हुए, बल्कि उन्होने दुगने जोश से 'अल-बलग' प्रकाशित करना आरंभ कर दिया, जिसके लेख भी राष्ट्र निर्माण के पति महिलाओ की सोई हुई चेतना को झकझोर देने के लिए पर्याप्त थे। मगर भयभीत ब्रिटिश साम्राज्य ने सन् 1916 में इसे भी बंद कर दिया और राष्ट्र निर्माण में महिलाओ को उनकी भूमिका के प्रति सजग करने के अभियान मे जुटे आज़ाद को बगाल छोड़ने का आदेश दे डाला।

दरअसल एक स्त्री ही अपने बालको को यह शिक्षा और सस्कार दे सकती है कि सभी धर्मो के मूल तत्व एक समान है। मौलाना आज़ाद ने कुरान और हदीस का आधार बताते हुए इस बात की अपील की कि इस्लाम मे भी विश्व शाति की स्थापना पर बल दिया गया है। राष्ट्र निर्माण के लिए शाति एक आवश्यक शर्त है। मज़हबी आधार पर राष्ट्र निर्माण के लिए शाति एक आवश्यक शर्त है। मज़हबी आधार पर राष्ट्र निर्माण के लिए खतरा बन रहे अवशिष्ट तत्वों को बाहर फेकने का काम महिलाएँ ही कर सकती है।

वस्तुत. किसी भी राष्ट्र का निर्माण एकता के बगैर सभव नही है। इसके लिए समाज के सभी वर्गो मे पूर्ण सौहार्द और भारतीयता की भावना जरूरी है, जो महिलाएँ ही जागृत कर सकती हैं।

मौलाना आज़ाद राष्ट्रीय एकता को न केवल भारत के लिए वरन् सपूर्ण मानव जाति के लिए ही महत्वपूर्ण मानते थे। उनका कहना था कि—

"यदि राष्ट्र की एकता नष्ट होती है तो समूची मानव जाति का नुकसान होगा।"

इसी आधार पर मौलाना आज़ाद यह भावना रखते थे कि उनके जीवन का उद्देश्य लोगो को एकता के सूत्र मे बांधना है और ऐसा कोई कार्य नहीं करना है जो लोगों को एक-दूसरे से अलग करता हो। उन्होंने अपने इस आदर्श का जीवन मे

पूरी तरह से पालन किया, इतिहास इसका साक्षी है। वास्तव मे वे एक महान व्यक्ति थे और उन्होंने भारत की महान संयुक्त सस्कृति का प्रतिनधित्व किया था। उन्होंने कुरान मे बार-बार आए संदेश '**समूची मानव जाति एक कौम है**' में '**वसुधैव कुटुम्बकम्**' की प्रतिध्वनि को सुना था।

राष्ट्र निर्माण में सामाजिक बाधाएँ और महिलाएँ: संदर्भ मौलाना आज़ाद

सामाजिक कुरीतियॉ जैसे पर्दा प्रथा, बाल विवाह, सती प्रथा, दहेज प्रथा, महिला अशिक्षा राष्ट्र निर्माण की बड़ी बाधा है, जिन्हें दूर करना जरूरी है, ताकि महिलाएँ आगे आएँ ओर स्वस्थ राष्ट्र के निर्माण मे अपनी भूमिका का निर्वाह कर सके।

मौलाना आज़ाद चाहते थे कि हिन्दू और मुस्लिम दोनो महिलाएँ पर्दा छोड़कर बाहर आएँ और अपनी सोई हुई शक्ति को पहचाने। वे यह भी मानते थे कि राष्ट्र निर्माण के लिए स्त्री-पुरुष दोनो को समान दर्जा देना अत्यत आवश्यक है। राष्ट्र निर्माण के लिए दोनो को सामंजस्य से चलना होगा, साझा जीवन जीना होगा तभी राष्ट्र निर्माण की नीव पड़ेगी।

मौलाना आज़ाद स्त्रियो के प्रति सकुचित दृष्टिकोण को राष्ट्र निर्माण की बाधा मानते थे और चाहते थे कि स्वस्थ राष्ट्र के निर्माण के लिए इससे दूर रहा जाए।

मौलाना आज़ाद जब मात्र सोलह वर्ष की आयु के थे तभी उनके सपादन में निकल रहे अखबार 'लिसान-अल-सिदक्क' के माध्यम से उन्होने समाज मे सुधार लाने के प्रयत्न किए। वे दूसरो के द्वारा स्थापित परम्परा के आलोचक थे। अपने तार्किक, खोजपूर्ण तथा स्वतत्र मस्तिष्क के कारण उन्होने स्वीकार्यता का विरोध किया। लोग उनके प्रेरणादायी संदेशों से प्रभावित थे।

उपसंहार

अत मे कहा जा सकता है कि मौलाना आज़ाद स्त्रियों के निर्भीक समर्थक रहे हैं। उनकी मान्यता थी कि स्त्रियों के विकास द्वारा ही स्वस्थ राष्ट्र का निर्माण संभव है और इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए वे जीवन भर सक्रिय रहे। स्त्रियों के विकास

में मौलाना आज़ाद का योगदान अनुपम है, जो भारतीय इतिहास मे सदैव अमर रहेगा। वे महान युग पुरुष थे।

मौलाना का जीवन कीर्ति से ही प्रकाशवान नहीं था, बल्कि उसमे राष्ट्र निर्माण की सीख भी है। उनके जीवन में जो महानता के लक्षण थे वे भावी पीढ़ी के लिए पथप्रदर्शक सिद्ध होगे।

प जवाहरलाल नेहरू मौलाना आज़ाद को बहुत निकट से जानते थे। उन्होने कहा था—

> **"मौलाना आज़ाद प्रदीप्त बुद्धि और विराट मेघा वाले व्यक्ति थे और उनमें समस्या की तह तक जाने की विलक्षण सामर्थ्य थी। मैंने प्रदीप्त शब्द का प्रयोग किया है ओर मै समझता हूँ कि उनके मस्तिष्क का वर्णन करने में संभवत. यही शब्द सर्वाधिक उपयुक्त है।"**

यदि आज भारत को अपनी और विश्व की दृष्टि से सम्मानजनक स्थान मिला है तो उसका एक महत्वपूर्ण कारण है—भारतीय महिलाओं का अपूर्व क्रातिकारी प्रयास।

जब कभी राष्ट्र निर्माण का इतिहास लिखा जाएगा तो उसमें महिलाओं की भूमिका का उल्लेख तो अवश्य ही होगा और यह भी महत्त्वपूर्ण है कि महिलाओ की इस भूमिका के रेखांकन मे मौलाना आज़ाद का भी महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

विशेषकर इसलिए भी कि मौलाना आज़ाद ने भारतीय महिलाओ के उस ओज को पहचाना और तराशा था, जिसे ऋग्वेद मे अभृग महर्षि की पुत्री वाक् ने जाना था और परमात्मा से तादात्म्य होते हुए कहा था—

"ॐ अह रुद्रेभि वसुभिः चरामि,
अहं आदित्यै. उत विश्व देवै
अहं मित्रावरुणोमा विभर्मि,
अहं इन्द्राग्नी, अहं आश्विनोभा।
अह एव बात एव प्रवामि,
आरभमाणा भुवनानि विश्वा·
परो दिवा पर एना पृथिव्या।
एतावती महिना सम्बभूव ॐ।"

अर्थात् मैं ही रूद्र, वसु, आदित्य, विश्वदेव, मित्र, वरुण, इन्द्र, अग्नि, दोनों अश्विनी, सबका रूपधारण करके विचरती हूॅं। मै ही वायु के रूपों में बहती हुई सबके प्राण का पोषण करती हूँ। मैं ही सब भुवनों, जगतो, विश्वों को रचती और मिटाती हूँ और यह सब करती हुई भी, इस पृथ्वी और आकाश से और इन दोनो में जो कुछ है, उस सबसे परे भी हूँ।

सचमुच भारतीय महिला इतनी ही शक्ति सम्पन्न है। आवश्यकता है तो उनकी शक्ति को पहचानकर प्रदीप्त करने की, जो मौलाना आज़ाद ने सफलतापूर्वक किया।

राष्ट्र निर्माण में महिलाओं का योगदान : संदर्भ मौलाना आज़ाद

विधि नागर

राष्ट्र का अर्थ है समूह, आज़ादी का अर्थ है सामूहिक आज़ादी, बराबरी का अर्थ है बराबरी, फिर चाहे महिलाएँ हो या पुरुष। हमे समाज के हर क्षेत्र मे पुरुषों के कधे से कधा मिलाकर काम करने, आगे बढ़ने का अवसर प्रदान किया है—"हमारी आज़ादी ने"। यह हमे इतनी सहजता और सरलता से नही मिली, इसकी पृष्ठभूमि में छुपी हुई हैं असख्य शहादते, कुर्बानियॉ और अनेक वीर गाथाएँ। भारत की सास्कृतिक परपरा मे मॉ की समृद्ध परिकल्पना के साथ समाज में नारी का विशिष्ट स्थान माना जाता रहा है। आज भी भारत का इतिहास अनेक महान नारियो के त्याग और तपस्या से गौरवांवित है।

सन् 1857-58 का प्रथम बड़ा संग्राम विफल हो चुका था कारण—"संगठन", "एकता" और 'मतभेद'। परंतु यह वही समय था जहां से कुछ सदियों की राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक दासता के बाद नए भारत के पुन निर्माण का काम प्रारंभ हुआ, इसीलिए इसे **"नवजागरण काल"** कहा जाता है। इन सामाजिक परिवर्तनो की बहुत जिम्मेदार रही कुछ विदेशी विदुषियां, जिन्होंने भारतीय महिलाओ के साथ मिलकर कुरीति निवारण, स्वदेशी प्रचार और स्त्री शिक्षा मे महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जिससे सफल स्वातंत्र्य संघर्ष के लिए अच्छी पृष्ठिभूमि तैयार हो सके। इनमे से प्रमुख है—डॉ. एनी बेसेण्ट, भीकाजी कामा, स्लेड बहने आदि।

भारतीय नेताओ, स्वतंत्रता सग्राम सेनानियो की गौरव गाथाओ को शब्दो मे बांधना असंभव है। गुरु रविन्द्रनाथ ठाकुर, मदनमोहन मालवीय, सुभाषचन्द्र बोस,

वेकटरमन्, महात्मा गाधी, सरदार पटेल समेत एक ऐसा नाम भी है जिसे हम सम्मान, श्रद्धा और आदर के साथ याद करते रहेगें वह है स्वर्गीय मौलाना अबुल कलाम आज़ाद।

"मेरी तकदीर के ये नक्श ज़रा गौर से देख।
इसमें इक दौर की तारीख़ नजर आएगी।"

मौलाना अबुल कलाम आज़ाद स्वयं एक सस्था थे। उनका जन्म 11 सितंबर सन् 1888 में हुआ था। सच्चाई के झंडे को ऊचा रखना तथा झूठ, अन्याय का विरोध करना मौलाना के कुल की पुरानी नीति रही थी। उनकी तीनो बहने उनके साथ ही पढ़ती थी। अल्पायु से ही वे विभिन्न विद्याओ के विशेषज्ञ हो गए थे। धर्म, दर्शन तथा भाषा का पूर्ण ज्ञान रखने वाले, अरबी, फ़ारसी तथा उर्दू के साथ तुर्की भाषा पर भी पूर्ण अधिकार रखते थे। ज्योतिष तथा रसायन के अध्ययन मे रत, शायरी तथा पत्रकारिता मे लगे हुए, प्रकाशन मे विशेष रुचि, लेखन कार्य तथा आधुनिक विद्याओ मे रुचि, अनुवाद करने मे सिद्धहस्त थे। मात्र चौदह वर्ष की अल्पआयु में मौलाना ने अब्दुल रहमी अज़ीमाबादी की पुस्तक "तज़किरा-ए-सादिका" की काव्यात्मक समीक्षा लिखी। बहुत कम उम्र में मौलाना को जो ख्याति मिली वह शब्दो में नहीं बताई जा सकती। मात्र 12-13 वर्ष की आयु में उनका विवाह जुलैख़ा बेगम के साथ हुआ। उन्हे उर्दू फारसी की अच्छी शिक्षा प्राप्त थी तथा थोड़ी बहुत अरबी भी जानती थी। आपका एक पुत्र हुआ ''हसीन" जिसकी मृत्यु चार वर्ष की आयु में ही हो गई। बेगम जुलैख़ा सहृदयी, समझदार और सुशील थी। मौलाना जब 'तरजुमाल-उल-कुरान" लिख रहे थे तब वह उन्हे रात दो-दो बजे तक पखा झलती, उनकी सेवा करती। मौलाना जब भी जेल जाते तो अपने दुखो को कभी भी जाहिर नही होने देती अन्यथा मौलाना को उनके ही कष्टो का ध्यान आता और वे देश की सेवा में अपना समय न दे पाते। उनकी बेगम का यह निस्वार्थ प्रेम ही था जो मौलाना को कुछ कर गुजरने को प्रेरित करता था। जब मौलाना सन्1942 मे बंबई के ऐतिहासिक कांग्रेस अधिवेशन की अध्यक्षता करने जा रहे थे तो बेगम के चेहरे पर विचित्र सा भाव था। उन्होंने अपना दु:ख दर्द भुलाकर कहा खुदाहाफिज़ और जब मौलाना अहमदनगर के किले मे नज़रबन्द थे तभी उनका देहांत हुआ। मौलाना ने अपनी पुस्तक ''गुबारे ख़ातिर" में संकलित एक पत्र मे लिखा है–

"पिछले पच्चीस वर्षो में कितनी बार यात्रा भी की ओर कई बार गिरफ़्तारियां हुई लेकिन मैने इस प्रकार उन्हे दुखी होते कभी नहीं देखा था। क्या यह उसकी

भावुकता थी जो उसके मन पर छा गई थी। उस समय मेरा यही विचार था। लेकिन अब सोचता हूँ तो ख्याल होता है कि शायद उसे आने वाले समय का कुछ हल्का सा आभास होने लगा था। शायद वह महसूस कर रही थी कि इस जीवन मे यह हमारी यात्रा अंतिम भेंट है। वह खुदाहाफिज् इसलिए नही कर रही थी कि मै यात्रा पर जा रहा था। वह तो इसलिए कह रही थी कि खुद यात्रा करने वाली थी।"

जब देश के विभिन्न भागो से स्व बेगम आज़ाद के स्मारक के लिए धन इकट्ठा किया जा रहा था तब मौलाना ने "हिन्दुस्तान टाइम्स" 17 अगस्त सन् 1945 के एक प्रेस व्यक्तव्य मे कहा कि, 'स्मारक केवल उन व्यक्तियों की याद में बनाने चाहिए जो देश सेवा मे अद्वितीय व्यैक्तिक विशेषता के कारण विशेष स्थान के अधिकारी है। मै प्रार्थना करता हूँ कि एकत्रित धन "कमला नेहरू स्मारक हस्पताल इलाहाबाद" को हस्तारित कर दिया जाए।" पं जवाहरलाल नेहरू ने ''डिस्करवरी ऑफ इण्डिया" में लिखा है—इस्लाम की सच्ची परपराओ से ओतप्रोत मौलाना आज़ाद अपने ज्ञान एवं श्रेष्ठता के कारण इस्लामी देशों मे असाधारण रूप से जाने जाते थे। मिस्त्र, तुर्की, सीरिया, फिलिस्तीन, ईराक और ईरान के नेताओं से उनके व्यक्तिगत संबंध थे। उन्होने तुर्की और दूसरे देशों में स्वाधीनता की ललकार सुनी थी इसलिए उनका राजनीतिक दृष्टिकोण पुराने विचारों के मुसलमान नेताओ से अलग था। उन्होने धार्मिक सकीर्णता से काम नही लिया। वे हर बात को बुद्धि एवं प्रमाण की कसौटी पर परखना चाहते थे।

मौलाना ने रूढ़िवादी विचारों के किले पर हमला किया। वह बहुत अधिक समय तक गांधीजी के साथ रहे और दोनो मे प्रेम बढ़ा। गाधीजी की पारखी निगाहो ने उनके व्यक्तित्व में छुपी उनकी सच्चाई और दूरदृष्टि को भाप लिया था। मौलाना आश्चर्यजनक मानसिक योग्यताएँ लेकर पैदा हुए थे। वे मनुष्यता और शिष्टाचार के बहुत बड़े प्रचारक थे तथा हर हाल मे सन्तुष्ट रहते थे। सन् 1947 से 22 फरवरी सन् 1958 तक वह भारत के शिक्षा मत्री रहे। अपने इस कार्य काल मे उन्होने भारत के प्रत्येक व्यक्ति को पूर्ण रूप से शिक्षित करने के लिए अकल्पनीय कार्य किए। उनका मानना था कि मात्र किताबी ज्ञान से ही मनुष्य संपूर्ण नहीं होता वरन् तकनीकि, विज्ञान, कला, सभी मे उसका दखल होना चाहिए।

मौलाना ने महिलाओं की शिक्षा को पुरुषों की शिक्षा से अधिक महत्वपूर्ण बताया क्योकि इससे राष्ट्र मे नया जीवन और नई जागृति पैदा हो सकती है। धार्मिक शिक्षा को सरकारी तौर से विश्वविद्यालय में लागू नही किया। यह उनकी भाषाई समस्या को लेकर दूरदर्शिता थी। धर्म की सच्ची आत्मा को न केवल शिक्षा वरन् प्रत्येक पहलू में प्रचलित होना चाहिए इससे व्यक्ति में स्वाभिमान, दूरदृष्टि और इंसानी ज़ज्बात जन्म लेते हैं ऐसा उनका मानना था। उनके जीवन के मुख्य दो उद्देश्य थे—"राष्ट्रीय एकता" और "प्रत्येक भारतीय के लिए शिक्षा-दीक्षा"।

जब स्वतत्र भारत ऐसी सीमा पर खड़ा था जहा से सूर्योदय की लालिमा दिख रही थी और देश को प्रकाशित करने के लिए बड़े महत्वपूर्ण कदम उठाए जा रहे थे तभी मौलाना के शिक्षा मंत्री काल ने भी अनेक सोपान चढ़े।

1. विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग—स्थापना 1948 रिपोर्ट · 1949
2. माध्यमिक शिक्षा आयोग स्थापना 1952 रिपोर्ट . 1955
3. अखिल भारतीय तकनीकि शिक्षा परिषद का पुर्नगठन।
4. उच्च तकनीकि संस्थान, खड़गपुर की स्थापना।
5. विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की स्थापना।

6 फरवरी सन् 1958 में मौलाना ने शिक्षा मत्री के रूप मे अपने अतिम भाषण मे कहा था—

"जब मैने 1947 मे शिक्षा मन्त्रालय का कार्यभार सभाला था तो मैंने महसूस किया था कि शिक्षा सबंधी कठिनाइयो का समाधान केंद्र और राज्यो के आपसी सहयोग के बिना नही हो सकता। यद्यपि राज्यों मे शिक्षा का काम स्वयं राज्य की जिम्मेदारी है। लेकिन जब तक हम अपनी मजिल तक न पहुंच जाएँ केन्द्र को पूरी सहायता करनी चाहिए।"

उन्होंने तीन परिषदो की भी स्थापना की "साहित्य अकादमी", "संगीत नाटक अकादमी" और "ललित कला अकादमी" क्योकि उनका मानना था कि साहित्य और संगीत के बिना मनुष्य बिना पूंछ वाले पशु के समान होता है।

उन्होने स्वय अनेक पुस्तके लिखी तज़किर, कौल-ए-फैसल, जहान-ए-इस्लाम, तर्जुमान-उल-कुरान, खण्ड—1 खण्ड 2 आदि।

मौलाना आज़ाद 22 फरवरी सन् 1958 को इस देश की माटी को अलविदा कह गए। ऐसी महान् विभूति का विकल्प तो हो ही नहीं सकता। राष्ट्र निर्माण में

महिलाओ ने जो योगदान दिया है प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष रूप से प्रत्येक नेता–महिलाओ के योगदानो को नकार नही सकता। इस बीच महिलाओ द्वारा देश को स्वतंत्र कराने हेतु किए गए प्रयत्नो के लेखे-जोखे को देखना आवश्यक ही नही अनिवार्य हे। मौलाना के जन्म से पूर्व "कूका विद्रोह" हो चुका था। मैडम ब्लावत्सकी और कर्नल आलकाट ने अमेरिका मे सन् 1875 मे ''थियोसाफिकल सोसायटी" की स्थापना की। सन् 1893 में ऐनी बेसेण्ट ने भारत आकर इस सस्था का नेतृत्व सभाला। इस समय तक मार्गरेट कजिस, सरोजिनी नायडू आदि महिलाएँ स्वतत्रता आंदोलन मे सक्रिय भूमिका निभा रही थी और यह **'नवजागरण काल"** था जब मौलाना भी हृदय में आज़ादी की धधकती ज्वाला लेकर इस महायज्ञ मे कूद पड़े।

स्वदेशी आदोलन का विचार सबसे पहले पूना के गोपाल राय देशमुख के मन में उठा था। सन् 1903 मे "बग-भंग आंदोलन" से पहले अहमदाबाद मे स्वदेशी आंदोलन की शुरूआत हुई। जुलूसों रैलियो, धरनो द्वारा बहिष्कार आन्दोलन चलाने और स्वदेशी प्रचार के साथ उसके लिए फड एकत्रित करने में महिलाओं की मुख्य भूमिका थी। स्यालकोट की सुशीला देवी, दिल्ली की आज्ञावती और बगाल की सरला देवी चौधरी के अलावा असख्य महिलाओ ने इस आदोलन को साकार रूप दिया। महिलाएँ घरों से बाहर निकल आई। घर-घर चरखे व खादी का प्रचार हुआ। विदेशी वस्तुओं और कपड़ो की होली जलाई गई। धरने, सभाएँ, जुलूस, लाठी-गोली और जेले मरने का यह क्रम निरतर चलता रहा। बंगाल मे देशबंधु चितरजन दास की पत्नी वासती देवी, बहन उर्मिला देवी ने गिरफ्तारिया दी। गुजरात में कस्तूरबा, सरलादेवी साराभाई समेत अनेक बहने गिरफ्तार हुई। लेडी अब्दुल कादिर और नेहरु परिवार की महिलाएँ सुभद्रा कुमारी चौहान, नेपाल की सावित्री देवी आदि जनता मे जागरण की चेतना भर रहीं थी। यह आंदोलन प्रमुख रूप से महिलाओं द्वारा चलाया गया।

सन् 1915 मे सरोजिनी नायडू "होम लीग" की प्रतिनिधि बनकर इंग्लैड गई और इनके पीछे थी महिला संस्थाओ से जुड़ी हजारो महिलाएँ जो नारी शिक्षा और समाज सुधार के साथ इस आंदोलन के माध्यम से भारतीय महिलाओ के राजनैतिक अधिकार प्राप्ति की दिशा मे अग्रसर हो रही थी। सन् 1917 मे ही सरोजनी नायडू के नेतृत्व मे 14 प्रमुख महिलाओ का प्रतिनिधि मण्डल महिला मताधिकार की मांग लेकर मि. मांटेग्यू और वायसराय चेम्सफोर्ड से मिला था। पांच सालों मे भारतीय

महिलाओं के लिए मताधिकार सुलभ कराया और सन् 1919 का माट फोर्ड सुधार लाने में योगदान दिया। उसी वर्ष जब अमृतसर में जलियां वाला काण्ड हुआ तो पूरा देश हिल उठा। जब जनरल डायर ने क्रूरतापूर्ण आदेश से घायलों को बिना पानी बिना इलाज के रात भर तड़पने के लिए छोड़ दिया, तब जो महिलाएँ भीतर थी उनका काम उल्लेखनीय रहा। इनमे माता अत्तर कौर, रतन देवी का नाम प्रमुख है।

सन् 1921 मे गांधी जी ने अपने एक लेख द्वारा महिलाओ का आवाहन किया और प्रतिक्रिया मे हजारों की संख्या में पढ़ी-बेपढ़ी, अमीर-गरीब, सभी वर्गो की महिलाएँ अपने घरों से बाहर निकल आई। इस समय तक श्रीमती सरोजिनी नायडू राष्ट्रीय नेत्री के रूप मे उभर चुकी थी। सन् 1925 मे काग्रेस अधिवेशन में उन्हे अध्यक्ष चुन लिया गया था। इस पद पर चयनित वह पहली भारतीय महिला थी। अब महिला गतिविधियों मे तेजी आई और सन् 1926 में साउथ कनारा से कमला देवी चट्टोपाध्याय ने पहली बार चुनाव भी लड़ा। उसी वर्ष श्रीमती मुत्तुलक्ष्मी रेड्डी भारत की पहली महिला विधायक के रूप से मद्रास विधान सभा मे पहुंची और उपाध्यक्ष भी बनी।

सन् 1927 में "अखिल भारतीय महिला सम्मेलन" अस्तित्व में आया और उसके प्रथम अधिवेशन ने ही सारे देश की महिलाओ का ध्यान आकर्षित किया। फिर सन् 1928 में "साइमन कमीशन बहिष्कार आन्दोलन" हुआ जिसमे दुर्गा भाभी, सुशीला देवी, प्रकाशवती, लज्जावती आदि के नाम कभी नहीं भूले जा सकते। उसी दौरान बेगम अब्दुल कादिर, अमीना गुलाम रसूल कुरैशी, कुसुम बेन, गंगा बेन, मणि बेन, दंडा बेन आदि गुजरात में "कर बदी आंदोलन" मे सहयोग कर रही थी।

सन् 1930-31 मे नमक सत्याग्रह मे गांधी जी ने दाडी यात्रा कर गैर कानूनी नमक बनाकर कानून तोड़ा। अग्रेजो ने डडे बरसाए भारतीयों ने मार खाई, गिरफ्तारियां दी पर आन्दोलन चलता रहा। घायलो की देखभाल करने के लिए शिविर प्रबध श्रीमती जानकी देवी बज़ाज संभाल रही थी और अनेक स्वयं सेविकाएँ उनके काम में सहायता कर रही थी। इस आदोलन मे कुल एक लाख व्यक्ति जेल में गए जिसमें से 17 हजार महिलाओ की संख्या थी। आन्दोलन के दौरान हजारो स्त्रियों ने धरनों, जूलसों के समय कड़ी धूप मे भूख प्यास के कष्ट झेले। लाठिया

और गोलिया खाई। जेलो मे भी उन्हें बहुत तकलीफे दी गई। जो परिवार, सरकार को टैक्स नही देते थे, उनकी स्त्रियों को अपने गोद के बच्चे भी साथ रखने की इज़ाजत न थी, पर उन्होने सभी तकलीफो का खुशी से सामना किया। बच्चे, आर्थिक अभाव, आदि की परवाह किए बिना स्वतत्रता पाने को आतुर सभी ने कष्टो को सुखो मे बदल दिया। रूढ़वादिता, छुआछूत, ऊंचनीच का भेदभाव स्वत. मिट गया और सभी आज़ादी पाने की निर्मल धारा मे स्वच्छ हृदय से बहने लगे।

सन् 1937 के चुनाव मे आठ महिलाएँ सामान्य चुनाव क्षेत्रो से और बयालिस आरक्षित चुनाव क्षेत्रों से चुनकर आई। "अपर हाउस" के लिए भी पांच महिलाओं का नामाकन हुआ। विजयलक्ष्मी पडित भारत की पहली महिला मत्री के नाते सयुक्त प्रात मन्त्रिमडल में शामिल हुई। बेगम शाहनवाज, हसा मेहता सहित पाच महिलाएँ संसदीय सचिव भी बनी। अनुसूया बाई काले मध्य प्रात मे, सयुक्त प्रांत मे कुदसिया बेगम, सिध में सिप्पी मिलानी डिप्टी स्पीकर बनी।

सन् 1942 में 'भारत छोड़ों आंदोलन" का जयघोष करते हुए सभी लोग तिरंगा फहराने लगे। जो कभी घरो से बाहर न निकले थे वे भी सब निकल पड़े। सरकार ने विद्रोह कम करने के लिए कमर कस ली, सारे अत्याचार किए। जूलूसो का नेतृत्व करने वाली कई महिलाएँ गोली का शिकार भी हुई। नागपुर की श्रीमती सखाराम मात्ते, बंगाल के तामलुक सब डिवीजन की 73 वर्षीय वृद्धा मातंगिनी हाजरा, आसाम की चौदहवर्षीय किशोरी कनकलता और वृद्धा योगेश्वरी, कलकत्ता की प्रतिभा देवी, जुलूसों का नेतृत्व करते हुए पुलिस की गोली खाकर शहीद हुई। असंख्य महिलाएँ पुलिस कर्मियों द्वारा शील भंग के कारण अपमानित हुई। भूमिगत नेत्रियो में अरुणा आसफ अली, सुचेता कृपलानी और ऊषा मेहता प्रमुख थी। अरुणा आसफ अली पर सरकार ने पांच हजार का इनाम भी रखा था। ऊषा मेहता ने बबई मे गुप्त रेडियो चला रखा था जो सन्देश देता था। पूरा देश महिलाओ के माध्यम से सक्रिय हो उठा था। वनस्थली विद्यापीठ की श्रीमती रत्न शास्त्री स्वय जेल न जाकर अपनी शिक्षिकाओ के नेतृत्व मे छात्राओ के सेविका दल बनाकर सत्याग्रहियो के काम मे सहायता पहुचा रही थीं। निचले तबके की महिलाओ की भागेदारी भी कम नहीं थी। सथाल विद्रोह, कूका विद्रोह, निलहा विद्रोह आदि इसके उदाहरण है। गरम दल की अग्रणी कार्यकत्री डॉ. ऐनी बेसेन्ट ने "होम रूल लीग" का गठन कर होम रूल आंदोलन का नेतृत्व किया। प्रवासी भारतीयों मे भिखई जी कामा ने मुख्य भूमिका निभाई।

9 जुलाई सन् 1943 मे एक विशाल जनसभा मे नेता जी का आवाहन और उनके प्रत्युत्तर में महिलाओ की पूर्व स्थापित "वालटियर कोर" ने "रानी झांसी रेजीमेंट" खड़ी कर दी। कठिन प्रशिक्षण के बाद यह फौज लड़ने के लिए तैयार हो गई। इसमें प्रमुख कमाण्डर डॉ. लक्ष्मी स्वामी नाथन रहीं। कैप्टन भारतीय सहाय, श्रीमती बंसल कौर, बेला मित्र आदि के एक लंबे अनवरत् सघर्ष के पश्चात् सन् 1947 मे भारत आज़ाद हो गया। स्त्री पुरुष के आज़ाद समूह से हुआ राष्ट्र निर्माण। मौलाना सदैव अपने वरिष्ठ साथियों से प्रेरणा लेते रहे तथा सहयोग करते रहे। वास्तव मे देखा जाए तो उस समय लिंग भेद ही मिट चुका था। प्रत्येक व्यक्ति अपनी आज़ादी की अभिलाषा पूर्ति मे अपना सर्वस्व भूल चुका था। जिसे जो भी कार्य दिया जाता वह निष्ठा के साथ पूर्ण करने मे लग जाता था। मौलाना की बेगम ने सदैव आज़ाद का साथ दिया। अपने आप में यह भी राष्ट्र निर्माण मे योगदान ही तो था।

एक प्रसंग के अनुसार मौलाना को सज़ा सुना दी गई तो बेगम ने अपने शौहर को तार भेजा परतु उसे अंग्रेजी सरकार द्वारा रोक दिया गया। तब उन्होंने एक वक्तव्य मे कहा "मैने इरादा कर लिया था कि उनको सज़ा हो जाने के बाद मैं अपना जीवन उन कर्तव्यो के पालन मे लगा दूगीं, मै आज से बंगाल प्रान्तीय खिलाफत कमेटी के सारे कामो को अपने भाई की सहायता से पूरी करूंगी। उन्होने मुझसे कहा कि यह संदेश आपको पहुंचा दूं कि उस समय दोनो में से कोई पक्ष सधि के लिए तैयार नही होगा न सरकार न देश। इसलिए हमारे सामने केवल अपने आप को तैयार करने का ही काम है।" इस प्रकार से जोशीले भाषण कह कर बेगम ने देश स्वतंत्र कराने में अपनी भागीदारी दी।

राष्ट्र के निर्माण में मौलाना आज़ाद ने अपने सद्कार्यो की जो गंगा बहाई है उसे गागर मे भर पाना असभव है। स्वतत्रता सग्राम से लेकर शिक्षा मत्री के रूप मे उनका बौद्धिक क्षितिज विस्तृत रहा है। मौलाना ने जो सपना सजोया था उसे स्वयं ही साकार भी किया। शिक्षा एक ऐसी कस्तूरी है जिसकी सुगध स्वत· ही प्रस्फुटित हो उठती है। उन्होने अंतर्राष्ट्रीय सीमाओं को "भारतीय सास्कृतिक संबंध परिषद्" के माध्यम से मिटाने की चेष्टा की जिसमे साहित्य, कला और सस्कृति ने प्रमुख भूमिका निभाई। उनके निधन पर डॉ राधाकृष्णन ने कहा था—

"वे जिस बात के पोषक थे उसे मस्तिष्क की स्वतत्रता कहा जा सकता है, यह मस्तिष्क की ऐसी स्थिति है जो नस्ल या भाषा, प्रात या बोली, धर्म या जाति के सकीर्ण भेदभावों से मुक्त है। मौलाना के रूप मे हमे एक सभ्य मस्तिष्क उपलब्ध था। निश्चय ही उन जैसा दूसरा नही मिलेगा। वे महामानव, एक वैभवशाली, अटल साहसी और निर्भीक मनुष्य थे। इन्ही बातो का नाम था "मौलाना"।

"इक चिराग ए खुदा फिर से देना
हो कोहिनूर ऐसा और नाम मौलाना"।

राष्ट्र निर्माण में महिलाओं का योगदान : संदर्भ मौलाना आज़ाद

राना रिज़वी

तुम मुझे एक योग्य माता दो
मै तुम्हें एक योग्य राष्ट्र दूंगा।

नेपोलियन बोनापार्ट

विश्व में भारत ही एक ऐसा देश है जहाॅ माता को प्रधानता देते हुए "मातृ देवो भव." को व्यावहारिक रूप दिया गया है। प्राचीन भारत के महान विधिकर्ता मनु ने कहा था—'यत्र नार्यास्तु पूज्यते, रमन्ते तत्र देवा:।' अर्थात जहां नारियो का सम्मान होता है वही देवता भी निवास करते हैं। भारतीय सामाजिक व्यवस्था मे विद्या, धन और बल इन तीनों की स्वामिनी नारी ही मानी गई है जिनकी प्रतीक सरस्वती, लक्ष्मी और दुर्गा हैं। महाभारत मे भी कहा गया है कि—'पुरुष का स्त्री के समान न कोई बंधु है न धर्म साधन में वैसा कोई सहायक ही है।' यह भी कहा गया है कि—'पति के लिए चरित्र, परिवार के लिए ममता, देश तथा समाज के लिए शील, विश्व के लिए दया तथा करूणा सजोकर रखने वाली का नाम ही नारी है।' महाभारत में यह भी कहा गया है कि गृह स्वामिनी एवं मां के रूप में नारी को पिता तथा आचार्य से भी उच्च स्थान प्राप्त है (गुरूणां चैव सर्वेषा माता परम को गुरु)।

महाभारत में स्त्री को देश तथा समाज के लिए शील इसलिए कहा गया है क्योकि वह अपने त्याग, तपस्या बलिदान तथा आत्मविश्वास से राष्ट्र निर्माण में सहायक होती है। भारतीय स्त्रियों ने प्राचीन काल से ही अपने इन गुणो का भरपूर

प्रदर्शन किया है। देश की स्वतत्रता के लिए अपना सब कुछ बलिदान कर देनी वाली महिलाओ के जीवन चरित्र से भारतीय इतिहास भरा पड़ा है।

आधुनिक भारत के निर्माण मे मौलाना अबुल कलाम आज़ाद की सहयोगी महिलाओ ने जो योगदान दिया है उसका मूल्याकन इस प्रकार किया जा सकता है।

श्रीमती अरूणा आसफ़ अली

अरूणा आसफ अली को दैनिक ट्रिब्यून ने 1942 की '*झांसी की रानी*' की सज्ञा दी थी। छात्र जीवन से ही गाधीजी से प्रभावित अरूणा आसफ अली ने साहस दिखाकर हिंदू-मुस्लिम एकता की मिसाल रखी। वह 1930 से ही 'नमक सत्याग्रह' के समय राष्ट्रीय मुक्ति सग्राम की एक अग्रणी नेत्री के रूप मे सामने आ चुकी थी। मार्च **1944** मे उन्होने इकलाब पत्र मे लिखा था कि ***'आज़ादी की लड़ाई के लिए हिंसा-अहिंसा की बहस मे नहीं पड़ना चाहिए। यह क्रांति का समय है। देश का हर नागरिक अपने ढंग से क्रांति का सिपाही बने और राष्ट्र के पुर्ननिर्माण की दिशा में कार्य करे।'***

8 अगस्त 1942 को 'भारत छोड़ो' प्रस्ताव के परित होने के बाद सारे देश मे राजनैतिक हलचल मच गई थी। भारतीय सेना मे भी विदेशी शासको के प्रति असतोष उत्पन्न होने लगा था। इसी बीच बबई में भारतीय नौसेना के कुछ जवानो तथा अधिकारियों ने ब्रिटिश सरकार पर जातीय भेदभाव का आरोप लगाते हुए खुले स्वर में विरोध प्रकट करना प्रारंभ कर दिया। अरूणा आसफ अली ने नो सेना अधिकारियो की मागों को जायज़ करार देते हुए उनके आदोलन को समर्थन देने का ऐलान कर दिया और वह बबई से दिल्ली आकर मौलाना अबुल कलाम आज़ाद से मिली और उनका समर्थन मागा। मौलाना आज़ाद ने नौ सेना अधिकारियों की माग को जायज़ मानते हुए श्रीमती आसफ़ अली को समझाया कि इस समय रक्षा सेवा के किसी अंग द्वारा विद्रोह करना देश के हित मे नही है इसलिए अधिकारियो को काम पर वापस जाना चाहिए। सभवत· मौलाना आज़ाद की निगाहे सन् **1857** के स्वतंत्रता संग्राम की असफलता की ओर थी जिसका मुख्य कारण यह था कि विद्रोह की निर्धारित तिथि से पहले ही सेना के कुछ जवानों ने विद्रोह का बिगुल बजा दिया था जिससे ब्रिटिश सरकार सचेत हो गई और विद्रोह को दबा दिया गया था।

अरूणा आसफ़ अली तथा उनके पति आसफ़ अली मौलाना आज़ाद के निकट सहयोगी थे। दिल्ली में मौलाना आज़ाद अक्सर आसफ अली के साथ ही रहते थे। अहमद नगर जेल में भी वह मौलाना आज़ाद के साथ रहे थे। इस दौरान अरूणा आसफ अली गिरफ्तारी से बचने के लिए भूमिगत हो गई थी और राष्ट्रीय आंदोलन को गुप्त तरीके से आगे बढ़ाती रही। सन् **1942** से **1947** तक वह अपनी गतिविधियो को एक क्रांतिकारी की भांति निभाती रही। उन्होंने ब्रिटिश सरकार की नज़रों से बच कर सारे देश का दौरा किया और सगठन को मजबूत बनाया।

मौलाना आज़ाद ने अपनी पुस्तक 'इडिया विन्स फ्रीडम' मे अरुणा आसफ अली के स्वतंत्रता आदोलन मे योगदान का उल्लेख किया है। भारत की आजादी के बाद भी अरूणा आसफ़ अली राष्ट्र निर्माण के कार्यो मे लगी रही। सन् **1961** मे गोवा की मुक्ति के लिए बनी राष्ट्रीय संघर्ष समिति की भी वह अध्यक्ष रहीं। राष्ट्र निर्माण मे उनके योगदान के लिए उन्हे जुलाई **1997** मे मरणोपरांत 'भारत रत्न' से सम्मानित किया गया।

सरोजिनी नायडू

मार्च **1940** में रामगढ़ अधिवेशन मे काग्रेस अध्यक्ष चुने जाने के बाद मौलाना अबुल कलाम आज़ाद ने जो दस सदस्यीय कार्य समिति बनाई थी उसमें सरोजिनी नायडू ही अकेली महिला सदस्या थीं। वह प्रारंभ से ही मौलाना आज़ाद की सहयोगी रही थीं और देश के विभिन्न भागों मे उनके साथ दौरा किया था। उन्होने मौलाना आज़ाद के साथ जून **1921** में घाटकोपर (बंबई का एक उपनगर) में एक विशाल जन सभा को सबोधित किया था जिसमे 'तिलक स्वराज्य कोष' के लिए चन्दा इकट्ठा किया था। इस अवसर पर महात्मा गाधी भी उपस्थित थे और उन्होने मौलाना आज़ाद का परिचय कराते हुए कहा था कि—***'यहां एक महान व्यक्ति मौलाना आज़ाद भी मौजूद है। इस्लाम धर्म और इस्लामी कानूनों के मामलों में इनकी बात बहुत प्रमाणिक मानी जाती है।'***

24 जुलाई **1925** को मौलाना आज़ाद तथा सरोजिनी नायडू ने अपने हस्ताक्षरों से एक संयुक्त अपील जारी की थी जिसमे प्रसिद्ध बगाली नेता देशबधु चितरजन दास के स्मरण में एक कोष स्थापित करने का ऐलान किया गया था।

सन 1879 में जन्मी सरोजिनी नायडू राष्ट्रीय एकता की प्रबल समर्थक थी और वह इस क्षेत्र मे गाधीजी के आने से पहले ही कार्य कर रही थी। उन्होने **1906** मे कलकत्ता मे राष्ट्रीय काग्रेस के अधिवेशन को सबोधित करते हुए राष्ट्रीय एकता पर बहुत ही ओजस्वी भाषण दिया था। इसके बाद **1913** मे उन्होने मौलाना अबुल कलाम आज़ाद के साथ लखनऊ मे मुस्लिम लीग की अधिवेशन को सबोधित करके राष्ट्रीय एकता पर अपने विचार रखे। वह एनी बीसेन्ट के होम रूल आदोलन से भी जुड़ी थी और **1919** मे भारतीय होमरूल लीग के प्रतिनिधि-मडल में शामिल होकर लंदन गई जहा उन्होने भारतीय स्त्रियों के मताधिकार की खुलकर वकालत की। सन् **1925** मे उन्हे काग्रेस के अध्यक्ष पद पर चुन लिया गया। उनके काग्रेस अध्यक्षा चुने जाने के बाद एक तीन सदस्यीय समिति बनाई गई थी जिसमे सरोजिनी नायडू के साथ मौलाना अबुल कलाम आज़ाद तथा प. मोतीलाल नेहरू शामिल थे। इस समिति को काग्रेस के प्रकाशन विभाग की जिम्मेदारी सौपी गई थी जहा राष्ट्रीय एकता को मजबूत करने के लिए सामग्री प्रकाशित की जाती थी। यह समिति जुलाई **1926** मे बनी थी।

10 जुलाई **1940** को मौलाना अबुल कलाम आज़ाद, सरोजिनी नायडू तथा पडित नेहरू ने दिल्ली के गाधी ग्राउड में एक विशाल जनसभा को सबोधित किया जिसमे भारत की आज़ादी की मांग दोहराई गई। इस सभा मे मौलाना आज़ाद तथा सरोजिनी नायडू ने लोगो से अपील की कि वह राष्ट्रीय एकता के लक्ष्य को ध्यान मे रखते हुए साम्प्रदायिक दलों से दूर रहे। सरोजिनी नायडू खादी के प्रचार तथा प्रसार से भी जुड़ी रहीं। **25** दिसबर **1936** को उन्होने महाराष्ट्र मे खादी तथा ग्रामोद्योग प्रदर्शनी मे मौलाना अबुल कलाम आज़ाद तथा कस्तूरबा गाधी के साथ हिस्सा लिया था और खादी के महत्व पर प्रकाश डाला था।

आज़ादी के बाद उन्हे उत्तर प्रदेश मे स्वतत्र भारत की पहली महिला राज्यपाल बनने का भी गौरव प्राप्त हुआ।

एनी बीसेंट

आल इंडिया होम रूल लीग की सस्थापक एनी बीसेंट आयरिश मूल की महिला थी किंतु उन्होंने भारत को ही अपना घर बना लिया था और भारतीयो के

शैक्षिक, सामाजिक तथा राजनीतिक उत्थान को ही अपना जीवन लक्ष्य बना लिया।

एनी बीसेन्ट का भारतीय राजनीतिक क्षितिज पर उदय उस समय हुआ था जब राष्ट्रीय आंदोलन केवल कुछ ही क्षेत्रो मे सीमित था और क्रातिकारियो पर ब्रिटिश सरकार का दबाव बढ़ गया था। देश मे सुयोग्य नेताओ की कमी भी महसूस हो रही थी। सन् **1915** मे दो प्रमुख नेताओ, गोपालकृष्ण गोखले और फिरोजशाह मेहता का निधिन हो गया। बाल गगाधर तिलक को एक वर्ष पूर्व ही जेल से रिहा किया गया था कितु उनका स्वास्थ्य इतना गिर गया था कि वह देश के विभिन्न भागो का दौरा करने मे असमर्थ थे। लाला लाजपत राय उस समय अमरीका मे थे। गाधीजी भी उसी समय भारत वापस आए थे लेकिन उनके बारे में देश की अधिकाश जनता अभी तक अनभिज्ञ थी।

ऐसे समय मे एनी बीसेट द्वारा सन् **1915** मे आल इडिया होम रूल लीग की स्थापना एक महत्वपूर्ण कार्य था जिसके द्वारा उन्होने स्वराज्य की धारणा को देश के कोने-कोने तथा गांव-गांव में पहुंचाया। इसके बाद उन्होने कुछ अन्य सगठन जैसे संस आफ इडिया, ब्रदर्स आफ सर्विस तथा यगमेन इंडियन एसोसिएशन आदि की स्थापना करके अपनी राष्ट्रवादी गतिविधियो को आगे बढ़ाया। होमरूल आदोलन के कारण ऐनी बीसेट दो वर्षो में ही इतनी प्रसिद्ध हो गई थी कि उन्हें सन् **1917** के काग्रेस अधिवेशन मे अध्यक्ष चुन लिया गया।

जब एनी बीसेट ने काग्रेस अध्यक्ष का पदभार ग्रहण किया उस समय मौलाना अबुल कलाम आज़ाद राची मे नजरबद थे। होमरूल लीग ने उनकी तथा खिलाफत नेताओ की रिहाई के लिए प्रयत्न किए, कितु ब्रिटिश सरकार ने उन्हे सन् **1919** के अत मे ही रिहा किया।

भारत मे होमरूल लीग की सफलता के पीछे मौलाना आज़ाद के पत्र 'अल-हिलाल' की भूमिका को नज़रअंदाज नही किया जा सकता। सत्य तो यह है कि होमरूल लीग की स्थापना के दो वर्षो पूर्व ही मौलाना आजाद ने अल-हिलाल के माध्यम से इस संबंध मे देश की जनता को शिक्षित करना प्रारम्भ कर दिया था। सरकार ने इस प्रकार के लेख प्रकाशित करने के लिए अल-हिलाल पर जुर्माना भी किया था।

एनी बीसेट के नेतृत्व मे होमरूल लीग की प्रथम मीटिग मद्रास मे 3 सितबर 1915 मे हुई थी जिसमे लगभग 500 सदस्य बनाए गए। होमरूल लीग की एक शाखा लदन मे भी खोली गई थी ताकि ब्रिटिश जनता को भारत की राजनीतिक गतिविधियो से अवगत कराया जाता रहे। भारत मे इसकी शाखाएँ लगभग सभी प्रमुख नगरो मे थी।

प्रमुख बिटिश कजरवेटिव सर वेलेन्टाईन चिरोल ने अपनी पुस्तक 'इडियन अनरेस्ट' (भारतीय असतोष) मे भारतीयो मे राष्ट्रीयता की भावना पैदा करने में ऐनी बीसेट के योगदान की सराहना की है। एनी बीसेट स्वराज्य की प्राप्ति के लिए राष्ट्रीय एकता को आवश्यक मानती थी। इडियन रिव्यू (फरवरी 1925) मे छपे एक लेख मे उन्होने विभिन्न राजनीतिक दलों का आवाहन किया था कि वह समान लक्ष्य की प्राप्ति के लिए एक हो जाएँ। उन्होंने कहा—'*स्वराज्य की प्राप्ति के लिए राष्ट्र को एकता का प्रदर्शन करना चाहिए—जैसा कि जन आंदोलन के रूप में 1917 में देखने में आया था। क्या बच्चे अपनी में को टुकड़ों में बांट सकते हैं, क्या भाई-भाई का झगड़ा मां के गौरवपूर्ण जीवन का अंत नही है?*'

इससे पूर्व 'न्यू इंडिया' मे छपे अपने एक लेख (अक्टूबर 19, 1920) मे उन्होंने कहा कि—"*भारत में अभी एकता नहीं है और हमें यह एकता पैदा करनी है। अगर मद्रास में ब्राह्मण और गैर-ब्राह्मण एक साथ शांतिपूर्वक नहीं रह सकते तो हम एक एकीकृत भारत की आशा कैसे कर सकते है ? यदि विभिन्न धर्मों के बीच समन्वय स्थापित नहीं हुआ और छोटी-छोटी बातों को सुलझाया नहीं जा सका तो देश अनिवार्य एकता के अभाव में प्रतिरोधक क्षमता कैसे उत्पन्न करेगा? मेरा विश्वास है कि भारत स्वराज्य को प्राप्त करने में अवश्य सक्षम होगा।*"

देश मे राष्ट्रवाद का प्रचार तथा प्रसार करने वाली ऐनी बीसेट को जब जून 1917 मे नज़रबद कर दिया गया तो सारे देश में जन आदोलन प्रारभ हो गया। देश की जनता उनकी रिहाई के लिए सड़को पर उतरने लगी। महात्मा गांधी ने 2 सितम्बर 1917 को अपने एक लेख मे कहा कि—'एनी बीसेंट की नज़रबंदी हमारे पुरूषत्व का अपमान है—*एनी बीसेण्ट को सशस्त्र कार्यवाई से नहीं छुड़ाया जा सकता—कोई भी भारतीय इस प्रकार की कार्यवाही का समर्थन नहीं करेगा लेकिन हम प्रार्थना पत्रों आदि के द्वारा भी उनको आज़ाद नहीं*

करा सकते। काफी समय व्यतीत हो चुका है। यदि ऐनी बीसेण्ट को निर्धारित समय सीमा तक नहीं छोड़ा गया तो हम सब गिरफ्तारियां देगें। सत्य की सदैव विजय होती है। सत्य से बड़ा कोई धर्म नहीं है।'

एनी बीसेंट को अतत: 16 सितबर 1917 को आज़ाद कर दिया गया।

विजय लक्ष्मी पंडित

'आज तक हमारा काम परदेशी नींव के भवन को गिराना रहा है, परंतु अब हमें अपना भवन बनाना है जिसकी ईटें हम और आप है। हम जितने दृढ़ होंगे उतना ही सशक्त हमारा यह भवन होगा पर यदि हम दुर्बल रहे तो वह हवा के झोंके से गिर जाएगा। हमें बड़े राष्ट्रों का सामना करना है। समय आगे बढ़ रहा है और हम पिछड़ रहे है। हमें अपनी शक्ति और दुर्बलता की जांच करनी चाहिए कि हम किस प्रकार आगे बढ़े। हमारी स्वतंत्रता उस स्वतंत्रता का अंग है जिसके लिए दुनिया के सब व्यक्ति तड़प रहे हैं। हम अपने द्वारा विश्व को लाभ पहुंचा सकते हैं। हमारी क्रांति दुनिया में फैली है। विश्व की आंखें हम पर लगी है।'

यह शब्द है ऐशिया की प्रथम महिला राजदूत विजयलक्ष्मी पडित के जिन्होने भारत के नवनिर्माण में उल्लेखनीय योगदान दिया है।

1944 मे सैन फ्रैन्सिसको (अमरीका) काफ्रेस मे अत्यत प्रभावशाली ढंग से भारत का पक्ष रखते हुए उन्होंने कांफ्रेंस के सदस्यों को एक स्मृति-पत्र भेट किया जिसमें उन्होंने लिखा था कि—***'मेरी आवाज़ मेरे देश की आवाज है, जिस आवाज पर आज अंग्रेजों ने फौलादी आज्ञाएँ लगा दी है। मैं न केवल अपने देश की आवाज में बोल रही हूँ बल्कि ऐशिया के पददलित और पिछड़े राष्ट्रों की ओर से भी बोल रही हूँ।'***

1946 मे विजयलक्ष्मी पडित ने भारतीय शिष्ट-मंडल की नेता बनकर न्यूयार्क मे संयुक्त राष्ट्र संघ के अधिवेशन को सबोधित किया जिसमें उन्होंने दक्षिण अफ्रीका मे गोरो द्वारा भारतीयों पर किए जाने वाले अत्याचारों का प्रश्न अत्यंत प्रभावी ढंग से उठाया। उनकी विलक्षण प्रतिभा से यूरोपीय प्रतिनिधि भी आश्चर्यचकित हो गए। दूसरे दिन अमेरिका के एक समाचार पत्र ने इनकी प्रशासा में लिखा

कि—*'1946 की इस विलक्षण भारतीय नारी ने सारे विश्व मे क्रांति मचा दी है और दक्षिण अफ्रीका में गोरों द्वारा भारतीयों पर किए गए अत्याचारों के विरूद्ध किया हुआ इसका आंदोलन सफल हुआ है।'*

मौलाना अबुल कलाम आजाद विजय लक्ष्मी पडित की विलक्षण प्रतिभा से अत्यत प्रभावित थे। वह जवाहरलाल नेहरू के साथ-साथ विजयलक्ष्मी पंडित से भी राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय मुद्दो पर सलाह मशविरा करते रहते थे। महिला कांग्रेस की अध्यक्षा रहते हुए उन्होंने महिलाओ को राष्ट्रीय आदोलन से जोड़ने मे महत्वपूर्ण योगदान दिया। इसी क्रम में **3** मार्च **1942** को मौलाना अबुल कलाम आज़ाद ने पडित जवाहरलाल नेहरू को एक पत्र लिखकर महिलाओ की एक सलाहकार समिति बनाने का भी सुझाव दिया था। उनका सुझाव था कि महिला शाखा भारत के समस्त महिला सगठनो से सपर्क रखे तथा दीर्घकालीन कार्यक्रमो पर अधिक ध्यान दे। उनका यह भी मानना था कि देश की महिलाओ की सोच का असर देश की नैतिक स्थिति को प्रभावित करता है। पडित नेहरू ने इस सबंध मे मौलाना आज़ाद को विजयलक्ष्मी पडित से बात करने की सलाह दी थी जो उस समय महिला काग्रेस की अध्यक्षा के दायित्व का निर्वाह कर रही थी।

कस्तूरबा गांधी

वैसे तो कस्तूरबा का सार्वजनिक जीवन दक्षिण अफ्रीका से ही आरंभ हो गया था जहा वह जेल भी गई लेकिन भारत आने के बाद गांधीजी ने जितने भी काम किए उन सब में उन्होंने एक अनुभवी सैनिक के रूप में उनका हाथ बंटाया। चपारन में खेड़ा सत्याग्रह के समय उन्होंने महिलाओ की अनेक सभाओं की सबोधित किया जिससे महिलाओ मे एक नई चेतना जाग्रत हो गई।

1922 मे गांधीजी, मौलान आज़ाद तथा अन्य शीर्ष नेताओ की गिरफ्तारी तथा उन्हे कैद की सजा सुनाए जाने के बाद बा ने भारतवासियो को निम्न सदेश दिया जो भारतीय इतिहास में स्वर्णिम अक्षरो मे लिखे जाने योग्य है —

'आज मेरे पति को छः साल की कैद हुई है। इस जबरदस्त सज़ा से मैं थोड़ी सी अस्थिर हूँ, सो मुझे मंजूर करना चाहिए। लेकिन हम चाहें तो सज़ा की मुद्दत पूरी होने से पहले ही उनको जेल से छुड़ा सकते है।'

सफलता पाना हमारे हाथ की बात है। अगर हम असफल हुए तो इसमें हमारा ही दोष होगा और इसलिए मैं मेरे दु:ख में हमदर्दी रखने वाले और मेरे पति के लिए मुहब्बत रखने वाले स्त्री-पुरुषो से प्रार्थना करती हूँ कि वे दिन-रात लगे रहकर रचनात्मक कार्यक्रम को सफल बनाए। रचनात्मक कार्यक्रम में चरखा चलाना और खादी पैदा करना ही खास चीज़े हैं। गांधीजी को दी गई सज़ा का जवाब हम इस तरह से दें।

1. सभी औरत मर्द कताई को अपना धार्मिक कर्तव्य समझ ले, और दूसरों को भी वैसा करने के लिए समझाएँ।
2. सभी औरत मर्द परदेशी कपड़ा पहनना छोड़ दे और खुद खादी पहिने और दूसरों को भी पहिनने के लिए समझाएँ
3. सभी व्यापारी परदेशी कपड़े का व्यापार करना छोड़ दें।'

बा के इस सदेश का इतना व्यापक असर हुआ कि जगह जगह विदेशी कपड़ो का बहिष्कार होने लगा, चर्खे गूजने लगे और खादी का प्रचार होने लगा। बा इस समय एक नौजवान का जोश लेकर सार्वजनिक काम के लिए निकल पड़ी। वह कहती थी : *'मुझे अब आश्रम में चैन नहीं पड़ता। अब तो मुझे जितना बन पड़े बापू का काम करना चाहिए। बापू कार्यकर्ताओ को गांव में और आदिवासियों के बीच बसने को कह गए हैं। इसलिए मुझे भी गाव में ले चलो।'*

इस प्रकार कस्तूरबा राष्ट्र निर्माण के कार्यो को बढ़ावा देने के लिए गाव-गांव मे घूमती रही। कभी पैदल तो कभी बैलगाड़ी पर और लोगों को प्रेरणा देती रहीं— *"उमड़ते हुए जोश के समय तो सभी साथ देते हैं लेकिन जोश उतरने के बाद भी जो टिके रहते हैं वही पक्के है। दक्षिण अफ्रीका में भी ऐसी नाउम्मीदी छा गई थी लेकिन बहिने और खानों मे काम करने वाले मजदूर निकल पड़े और जीत हुई। उसी प्रकार मैं भी मानती हूँ कि आखिर जीत सत्य की ही होने वाली है।"*

ब्रिटिश सरकार की नौकरी करने वाले भारतीयों को भी उन्होने देशहित की नसीहत करते हुए कहा कि—*'सरकारी नौकरी करने वाले भाईयों ! आप लोग कब तक अपनी नौकरी से चिपटे रहेंगे। सिपाही अपने देश भाइयों पर लाठियां चलाते और गोलिया दागते हैं। उन्हें यह हिम्मत कैसे हो जाती है? भाइयों! हिम्मत से काम लो। भगवान आप में से किसी को भूखा नहीं*

रखेगा। पहिले बेगुनाह और देश भक्ति में पगे हुए बच्चो पर हाथ उठाना और फिर घर जाने के बाद आंखो मे पानी भरकर लबी आहें छोड़ना, इससे फायदा क्या? परमेश्वर का नाम लेकर हिम्मत से काम लो और नौकरी छोड़ दो। आज इसके सिवा दूसरा और संदेश मै क्या दूं? परमात्मा हम सबको शक्ति दें।'

इसी प्रकार स्वयसेवको को घायल देखकर बा अत्यत दुखी हुई किंतु करूणा मे बह नहीं गई बल्कि यह वीरतापूर्ण सदेश दिया—'ऐसी जबरदस्त तकलीफे सह लेने के बाद भी इन नौजवानो ने जिस वीरता और उत्साह का परिचय दिया है, उसे देखकर मेरा दिल खुशी से नाच उठा है। सत्य के लिए ऐसे बलिदान का दृष्टात तो इतिहास में अकेले एक हरिशचन्द्र का ही मिलता है।'

1942 मे गांधीजी तथा अन्य नेताओ के साथ कस्तूरबा भी गिरफ्तार करके आगा खा महल मे कैद कर दी गई और यही उन्होने अतिम विदा ली। कैद मे भी वह भारत की आज़ादी का सपना देखती रहती थी। एक बार उन्होने कहा कि—*'अब तो कृष्ण भगवान इन कौरवों से घिरे हुए हमारे देश की सुध ले तो अच्छा है। हम दोनों को चाहे जेल में रखे पर और सबकी रिहाई हो।'*

चलते समय उन्होंने अपनी बीमारी के हालत मे देवदास गाधी से यह मार्मिक शब्द कहे थे—*'सेवाग्राम जैसा भारतीय ढाचा छोड़कर आगा खाँ महल की ऊची भयावह दीवारें मेरे मन में बड़ी उदासी उत्पन्न करती है।'*

इन महिलाओ के अतिरिक्त अनगिनत ऐसी महिलाएँ भी है जो प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से राष्ट्र निर्माण के कार्यो में अपनी भूमिका निभाती रही। इनमे एक है **सरला देवी चौधरानी** जिन्होने सितंबर **1924** मे दिल्ली के सगम थियेटर हाल मे मौलाना अबुल कलाम आज़ाद के साथ 'एकता सम्मेलन' मे साप्रदायिक सघर्ष रोकने के लिए एक प्रस्ताव पारित कराया। इस प्रस्ताव मे कहा गया था कि सभी धर्मो के प्रचारक और धर्मगुरु अपने-अपने धर्म के अनुयायियो को ऐसी प्रथाओ और रीतियो का पालन करने की ओर प्रेरित करे जिनके मूल तत्व सभी धर्मो मे समान हो। यह प्रस्ताव स्वयं सरला देवी चौधरानी ने प्रस्तुत किया था और मौलाना आज़ाद ने इसका अनुमोदन किया था।

दूसरा उदाहरण है महात्मा गाधी तथा मौलाना आज़ाद की एक अन्य सहयोगी **मीरा बहन** का, जिन्होंने सितंबर **1930** मे सरकार की निषेधाज्ञा का उल्लघन करते

हुए हावड़ा मे महिलाओ के एक विशाल जुलूस का नेतृत्व किया और पुलिस के लाठीजार्च का सामना किया। उन्होने खादी के प्रचार तथा प्रसार के लिए सारे देश का दौरा भी किया था।

तीसरा उदाहरण मौलाना आज़ाद की समकालीन **कमलादेवी चटोपाध्याय** (जन्म 1903) का है जिन्होने राष्ट्र के पुननिर्माण के लिए यह सदेश दिया कि—

'जन क्रांति के पीछे जनता की शक्ति होनी चाहिए, जिसके लिए विदेशी राज्य के अंत का अर्थ है सैकड़ों वर्षो के कष्टों का अंत होना। यदि हम अपने स्वतंत्रता संग्राम के इस पहलू को भूल जाएँगें और स्वतत्रता का अर्थ केवल विदेशी शासन की समाप्ति को ही समझ लेगें तो हमारी यह विजय सर्वग्रासी अधिनायक तंत्र में बदल जाएगी। नेताओं को और जनता को अपनी इस विजय को उस आदर्श के निकट पहुंचाने का प्रयत्न करना चाहिए, जिसके लिए हज़ारों ने अपने प्राणों की बलि दी है। ब्रिटेन के साथ समझौता करने अथवा शोषक वर्ग की तुष्टि करने की वर्तमान नीति अगर शीघ्र नहीं छोड़ी गई तो हमारे नब्बे वर्षो के संघर्ष का अंत प्रतिक्रांति और भारतीय जनता के साथ विश्वासघात में परिणत हो सकता है, यह हमे नही भूलना चाहिए।'

एक उदाहरण **बेगम हसरत मोहानी** का है जिन्होने खिलाफत आन्दोलन के समय ब्रिटिश सरकार की उन शर्तो को मानने से इन्कार कर दिया जिन पर सरकार उनके पति मौलाना हसरत मोहानी को छोड़ने की पेशकश कर रही थी। इस पर मौलाना आज़ाद ने बेगम मोहानी को एक पत्र लिखकर उनकी प्रशंसा की थी और मौलाना मोहानी के कार्य को इस्लाम के प्रसिद्ध धार्मिक पूर्वज हज़रत यूसुफ के निर्भीकता पूर्ण त्याग के समान माना था।

मौलाना आज़ाद ने एक अवसर पर स्वय यह रहस्योद्घाटन किया था कि उनकी पत्नी *जुलेखा बेगम भी राष्ट्रीय आदोलन से अप्रत्यक्ष रूप से जुड़ी हुई थीं।* 11 अप्रैल 1943 को अहमदनगर जेल से अपने एक मित्र नवाब सदरयार जग को लिखे एक पत्र मे मौलाना ने कहा था कि—*'स्वतंत्रता संग्राम के ग़ैर मामूली हालात ने सरकार को गैर मामूली अधिकार दे दिए हैं और वह इन अधिकारो से हर तरह का काम ले सकती है। इस तरह के हालात पर मुझसे ज्यादा जुलेखा की नज़र रहा करती थी और उसने वक्त की सूरते हाल का पूरी*

तरह अंदाज कर लिया था।' इसकी पुष्टि जुलेख़ा बेगम के उस तार से होती है जो उन्होने **2** फरवरी **1922** को गांधीजी को उस समय भेजा था जब मौलाना आज़ाद को राजद्रोह के आरोप मे एक वर्ष के सश्रम कारावास का दड दिया गया था। इस तार मे उन्होने मौलाना आज़ाद के स्थान पर स्वयं राष्ट्रीय आदोलन मे कार्य करने की इच्छा प्रकट की थी और गांधी से इसकी अनुमति मागी थी। उन्होने लिखा था कि—*'आज मेरे पति को एक वर्ष की क़ैद हो गई है। उनकी गतिविधियों को देखते हुए यह सज़ा आशा से बहुत कम है। मैं इस कमी को पूरा करने के लिए बंगाल के कार्यकर्ताओं के साथ काम करना चाहती हूँ। मैं अपने भाई के साथ बंगाल राज्य ख़िलाफत कमेटी के कार्यों की भी ज़िम्मेदारी निभाना चाहती हूँ।'*

जुलेखा बेगम की मृत्यु 9 अप्रैल 1943 को हुई। उस समय मौलाना आज़ाद अहमदनगर जेल मे बंदी थे। बेगम आज़ाद की मृत्यु के बाद उनके कुछ प्रशंसको ने 'बेगम आज़ाद कोष' की स्थापना भी की थी किंतु मौलाना आज़ाद ने इस पर अपनी स्वीकृति नही दी और कोष के लिए एकत्रित की गई राशि को इलाहाबाद स्थित कमला नेहरू स्मारक अस्पताल को हस्तांतरित करने का निवेदन किया था।

राष्ट्र निर्माण में महिलाओं का योगदान : सन्दर्भ मौलाना आज़ाद

अब्दुल रषीद अब्दुल्ला

विषय-प्रवेश

राष्ट्र शब्द किसी देश तथा वहां रहनेवाली जनता दोनो के लिए प्रयुक्त होता है। सामान्यतया 'राष्ट्र' शब्द अंग्रेजी के 'नेशन' शब्द के पर्याय के रूप मे प्रयुक्त होता है। राष्ट्र में अनेक जातियो और धर्मों के लोग सम्मिलित होते है। 'राष्ट्र' शब्द मे एक प्रकार की सामूहिक चेतना की भावना होती है जो पूरे देश के निवासियो की भावना से सबधित होती है। इस सामूहिक चेतना को दृढ़तर बनाने के लिए सभी जातियो, वर्गो और विभिन्न धर्मावलबियो के बीच एक प्रकार का संतुलन बनाए रखने की आवश्यकता होती है। जब यह सतुलन बना रहेगा तभी एक आदर्श राष्ट्र का निर्माण सभव हो सकेगा।

भारत प्राचीन-काल से एक देश रहा है जिसमे विभिन्न राज्य सम्मिलित रहे है। हर एक राज्य की अपनी-अपनी भौगोलिक, सास्कृतिक व राजनैतिक सीमाएँ होने पर भी इन सब में 'भारतवर्ष' की भावना प्राचीनकाल से विद्यामान है। सभी राज्यो की सामूहिक भावना की यही अभिव्यक्ति इस देश को हमेशा एक सूत्र मे जुटे रखने मे सफल रहती आई है। इसी को हम 'राष्ट्रीय भावना' कह रहे है। राष्ट्र के निर्माण का मूल तत्व यही राष्ट्रीय भावना होती है। इसी राष्ट्रीय भावना के अतर्गत सास्कृतिक चेतना, पारिवारिक आचार-व्यवहार, धार्मिक अनुशासन, सामाजिक उत्तरदायितव, व्यक्तिगत विकास व सम्मान, वैचारिक स्वातत्र्य आदि सब आते हैं।

एक भावनात्मक वस्तु के निर्माण मे कोई भौतिक निर्माण नही होता, वह भी भावना-प्रधान ही होता है। इसलिए राष्ट्र के निर्माण की बात कहते हुए हमे यह ध्यान रखना चाहिए कि राष्ट्र का निर्माण भावनागम्य है न कि भौतिक-प्रदर्शन।

समाज व्यक्तियो का समूह है, जिसमे स्त्री-पुरुष दोनो शामिल है। भारतीय समाज मे पुरुष के साथ-साथ स्त्रियो को भी समान रूप से अधिकार और उत्तरदायित्व बाटे गए है। जहा पुरुष घर के बाहर के कार्यो का उत्तरदाई तथा प्रबन्धक रहा है वहा स्त्रियां गृह-लक्ष्मी बन कर घर के काम सभालते हुए गृहस्थी की अधिकारिणी बनी है। भारतीय समाज मे व्यापक दृष्टिकोण तथा सह-अस्तित्व की भावना प्राचीन काल से विद्यमान है। पैतृक व्यवस्था को अपनाने पर भी हमारे समाज मे स्त्री को समुचित स्थान दिया गया है। स्त्री के विभिन्न रूपो को समझने मे भारतीय समाज ने अग्रिमता दिखाई। सारी दुनिया में भारत की महिलाएँ अपना विशेष महत्व रखती है। हम ने उनके प्रेम, करुणा, ममता, स्नेह के साथ-साथ उनके धैर्य, त्याग, पराक्रम और साहस का भी अनुभव किया है। प्रकृति-परक कुछ असमानताएँ स्त्री-पुरुषो मे होने पर भी स्त्रिया हमेशा देश-सेवा के कार्य मे और देश के निर्माण के कार्य मे आगे बढ़ती ही रही। भारत जैसे देश की विकसित सस्कृति मे महिलाओ को अधिक सम्मानित दर्जा प्रदान किया गया हे। धर्मबद्ध भारत मे 'महिला' एक अलग 'अस्तित्व' नही है, पुरुषो के समकक्ष वह चाहे न रहे लेकिन पुरुष की भागस्वामिनी रह कर वह जो कार्य कर सकती है वह अन्य किसी समाज मे नही हो सकता।

श्री कन्हैयालाल नन्दन का कथन है—"हमारे पौराणिक आख्यानो मे नारी को शक्ति रूपा कहा गया है। शक्ति रूपा इसलिए क्योकि नारी शक्ति यानी ऊर्जा का पुज है, ऊर्जा का अथाह भण्डार है। दुर्गा सप्तशती मे दुर्गा के जिन नौ रूपो का उल्लेख किया गया है उसका भी अभिप्राय इसी विविध आयामी ऊर्जा से है जो किसी भी नारी मे विद्यमान मानी गई है।"

राष्ट्र-निर्माण या राष्ट्र-विकास का अर्थ राष्ट्र की जनता को उसकी रुचि, स्वतत्रता और मुक्ति का बोध कराना है। इसमे व्यक्तिगत और सामाजिक स्तरो पर निर्णय लेने की प्रक्रिया और प्रेरणा देने की शक्ति शामिल होती है।

राष्ट्र-निर्माण मे महिलाओ का योगदान अधिकतर भावना-प्रधान है। यानी राष्ट्रीय भावना को बढ़ावा देने में महिलाओ ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस

महत्वपूर्ण भावना को पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ाकर हम तक पहुंचाने में महिलाओ का सबसे बड़ा हाथ है। महिलाओ के इस योगदान को हम समय-गमन और विषय चयन की दृष्टि से दो प्रकार से देख सकते हैं।

विषयपरक दृष्टिकोण से महिलाओं का योगदान

विषय-चयन को प्रधानतया दृष्टि मे रखकर देखें तो महिलाओ में हमे जो महत्वपूर्ण गुण विरासत मे मिल रहे है वे हमारे राष्ट्र-निर्माण के मूलस्तम्भ माने जा सकते है। श्रद्धा, करुणा, दया, ममता, स्नेह आदि उन्नत गुणों का विकास महिलाओ में ही अधिक होता है। उनके मन की रागात्मक वृत्तियो की प्रबलता इन गुणो को बढ़ावा देती रहती है। नारी किस प्रकार जन-जीवन को प्रभावित करती है और वह किन-किन रूपो में हमारी प्रेरणा-स्रोत बनती है उसका सुन्दर वर्णन सुश्री शीला झुनझुनवाले के शब्दो में—*'व्यक्ति की समस्त चाहनाओ को देनेवाली देवियों के रूप मे उसे मान्यता प्राप्त थी। अंधकार और अन्याय का नाश करनेवाली महाकाली वह थी तो धन की अधिष्ठात्री लक्ष्मी भी वही थी। विद्यादायिनी सरस्वती और त्याग की प्रतिमूर्ति सीता भी वही थी। सत्ता की शक्ति स्त्री को ही माना गया था और वह है भी, क्योंकि शिव भी शक्ति के बिना शव है। शिव शब्द मे से नारी-शक्ति सूचक 'इ' की मात्रा हटा दीजिए, तो शिव का शव बनने मे कितनी देर लगती है?'*

प्रारभिक काल मे धार्मिक भावना से प्रेरित होकर कई महिलाओं ने ऐसी संस्कृति अपनी परवर्ती पीढ़ियों को दी जिसमे श्रद्धा व आत्मसमर्पण की भावनाएँ आज भी राष्ट्र-निर्माण में मददगार हो रही हैं। शिक्षित स्त्रियाँ सामाजिक रहन-सहन के स्तर को ऊंचा रखने में अधिक मददगार होती है। आजकल के समाज मे विभिन्न क्षेत्रों मे महिलाओ की प्रगति देखते हम कह सकते है कि देश की प्रगति में महिलाएँ पुरुषों से अधिक हाथ बॅटा रही हैं। आजकल महिलाएँ ट्रैक्टर, स्कूटर, आटो रिक्शा चलाने से लेकर हवाई जहाज तक और अतरिक्ष तक भी पहुच गई है। वे कृषि, उद्योग, कम्प्यूटर, देशरक्षा, उत्पादन व सेवा, एलक्ट्रानिक्स—इस प्रकार हर एक क्षेत्र मे अपने अस्तित्व को कायम बना रही हैं।

महत्वपूर्ण मानवीय मूल्यो को हम तक पहुंचाने में सीता, सावित्री, अनसूया, चन्द्रमती जैसी साध्वियो ने, वीरोचित गुणों की वृद्धि करने मे राणी पद्मिनी, झांसी

की रानी लक्ष्मीबाई आदि ने, समाजसेवा के क्षेत्र मे मदर टेरेसा आदि ने, राजनीति व शासन के क्षेत्र मे एनीबिसेट, विजयलक्ष्मी पडित, सरोजिनी नायुडू, श्रीमती इदिरा गाधी आदि ने और साहित्य के क्षेत्र मे मीराबाई, महादेवी वर्मा, सुभद्रा कुमारी चौहान आदि ने जो भी कार्य किए वे सब इस महोन्नत राष्ट्र के निर्माण मे अत्यंत प्रमुख घटनाएँ बनी और साथ ही साथ अन्य कई विशेष घटनाओ के लिए प्रेरणाप्रद भी बनी।

समयपरक दृष्टिकोण से महिला-योगदान

समय के गमन के अनुसार अगर हम देखें तो प्राचीन समय से लेकर आधुनिक समय तक महिलाओ ने विभिन्न कालो मे अपने महत्वपूर्ण कृत्यो से राष्ट्र-निर्माण मे महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

वैदिक साहित्य मे जीवन के हर क्षेत्र मे स्त्री को पुरुषो के बराबर का अधिकार प्राप्त है। वह कला, साहित्य, सस्कृति, विद्या के क्षेत्रो मे पुरुषो के बराबर थी। आखिर धर्म-संसदों और युद्धों मे साथ सम्मिलित थी।

समाज में स्त्री के दो प्रकार के रूप प्रकट होते है—एक उसकी मूल प्रकृति और दूसरी समाज द्वारा बनाई उसकी आकृति। अपनी मूल प्रकृति में वह ज्यादा मेहनती, व्यवहारकुशल, ईमानदार, कुशाग्र और लचीली है। समाज द्वारा बनाई गई आकृति में समाज मे प्रचलित मूल्य, प्रथाएँ, दूसरी शक्तियों और कारणों का समावेश होता है। आधुनिक समाज के हर क्षेत्र मे हम देख सकते है कि महिलाओ ने पुरुषो के साथ कन्धे से कन्धा मिला कर काम किया है। इतिहास ही इस बात का साक्षी है।

राष्ट्र-निर्माण के क्षेत्र मे समय की गति के अनुसार महिलाओं के योगदान की ओर दृष्टि डालने पर हमे पहले याद आती है वेद और पुराण काल की वे महिलाएँ जो अपने पातिव्रत्य की महिमा से देवताओ के लिए भी आराधनीय बनी है। वास्तव मे उस समय के समाज में स्त्री-पुरुषो मे कोई अतर नही था। गार्गी, मैत्रेयी, लोपामुद्रा जैसी महिलाओ ने अन्य ऋषियो के साथ-साथ वेद मन्त्रो के अध्ययन-अध्यापन मे हाथ बंटाया। सती अनसूया ने त्रिमूर्तियो को शिशु बनाकर दूध पिलाया तो सती सावित्री ने यमराज का भी सामना करके अपने पति को बचाया। सती सुमती ने कुष्ठरोग से पीड़ित अपने पति की सेवा मे जीवन बिताया तो सीता माई ने

रामचन्द्र के साथ बनवास बिताकर पति का साथ दिया। इन सब कहानियो मे सत्यता की मात्रा के बारे में विचार करना हमारा विषय नही है। इन कहानियों के माध्यम से हमे धर्म, त्याग, तपस्या, प्रेम, साहस, आत्मबल आदि महोन्नत मूल्य मिल रहे हैं जो हमारी उन्नति और तद्वारा समाज की उन्नति मे सहायक है। हरिश्चन्द्र को सत्य हरिश्चन्द्र बनाया तो उसकी पत्नी चंद्रमती ने, राजा रामचन्द्र को मर्यादा पुरुषोत्तम बनाया तो सीता ने। पुरुष समाज ने अपने दभ और अहंकार से जब-जब सुमार्ग से हटकर कुमार्ग पर जाने का प्रयत्न किया तब-तब उन्हे सही रास्ते पर लाने का प्रयत्न स्त्रियो ने ही किया। रावण को समझाया मंदोदरी ने, बाली को मना किया तारा ने, अनपढ़ कालिदास को महाकवि बनाया उसकी पत्नी ने, जीवन के लपट मे पड़े तुलसीदास को जीवन का रहस्य एव लक्ष्य समझाया उसकी पत्नी ने। इस प्रकार स्त्रियां भूले-भटकते समाज को सही पटरियो पर लाने का प्रयत्न हमेशा करती रहीं।

भारत एक लोकतान्त्रिक राष्ट्र-राज्य के रूप मे 20वी सदी मे अवतरित हुआ। इस राष्ट्र का अधिकतर पढ़ा-लिखा मध्य वर्ग स्त्रियो के प्रति अधिक सदय है। लेकिन स्त्रियो की दशा और उनके महत्व को केंद्र में रखते हुए भारत के आधुनिक इतिहास को खास कर स्वतत्रता आदोलन को फिर से लिखने की आवश्यकता अनुभव हो रही है। इसका कारण यह है कि राष्ट्र-निर्माण की इस महत्वपूर्ण दशा में महिलाओ ने जो महत्वपूर्ण कार्य किए है उन पर अधिक विचार नही हो रहा है। अपने पारिवारिक प्रतिबन्धो के कारण उनमें से अधिक अग्रश्रेणी नेता प्राय नही हो पाई हो लेकिन उन्होने जो भागीदारी दिखाई वह अविस्मरणीय है।

किसी भी राष्ट्र के लिए उसकी स्वतत्रता बहुत ही महत्वपूर्ण होती है। राष्ट्र का सही निर्माण उसकी स्वतत्रता में ही निभा रहता है। अस्वतत्र राष्ट्र तो राष्ट्र ही नही कहा जाएगा। वह किसी दूसरे की 'कॉलनी' बना रहेगा। भारत को स्वतत्र बनाने के प्रयत्न मे महिलाओ ने जो योगदान दिया है उसको हम कभी नही भूल पाएँगे। उस समय उन्होने जो साहस, धैर्य, पराक्रम और त्याग दिखाए वे हर एक समाज के लिए आदर्श बन कर रहेगे। भारत को स्वतत्र बनाने मे उन्होंने अपने जीवन को असिधारा पर चलाया।

भारत की महिलाओ ने मुक्ति-आंदोलन मे जो साहस दिखाया वह सब के लिए आदरणीय है। विख्यात लेखिका आशारानी व्होरा के शब्दों मे—' ..*नवजागरण*

काल से लेकर स्वराज्य सघर्ष की पूरी अवधि मे भारतीय स्त्रिया सुधारक और मनीषी पुरुषो के दिग्दर्शन मे उनके कधे-से-कंधा मिलाकर सामाजिक रूढ़ियो और देश की गुलामी के विरुद्ध एक साथ लडती दिखाई देगी।"

स्वतत्रता सग्राम के दौरान स्त्री के सर्जक और सहारक मूल्यो का समावेश होकर एक र्स्वशक्तिमई छवि बनी जो समाज के हित मे कल्याणकारी सिद्ध हुई। स्त्री को 'घरे-बाहिरे' का सतुलन बनाए रखने का उत्तरदायित्व होने के कारण प्रथम श्रेणी की महिला-नेता हमे बहुत विरल दिखाई देती है। इदिरा गाधी जैसी नेताओं ने अपनी विशिष्ट छाप छोड़ी तो वह अलग बात है। लेकिन इस दोहरे व्यक्तित्व को सभालते-सहेजते हुए महिलाओं ने राष्ट्रीय आदोलन मे जितना और जैसा योगदान दिया वह आदरणीय और श्रद्धास्पद है।

भारत के स्वतत्रता सग्राम के समय भारतीय महिला की निर्णय-शक्ति और सकल्पशक्ति पर जो आशकाएँ लोगो के मन मे थीं वे सब दूर हो गई। पहले लोग मानते थे कि महिलाएँ केवल शातिपूर्ण और व्यवस्थापूर्ण स्थितियो मे ही आगे आ सकती है। लेकिन आज़ादी के आंदोलन के उथल-पुथल सदर्भो मे उनके योगदान ने इसे गलत साबित किया। राष्ट्र-निर्माण मे महिलाओ के योगदान को जानने के लिए इस समय की महिलाओ और उनके कृत्यो के बारे मे अधिक जानने की आवश्यकता है।

सन् 1857 का सिपाही विद्रोह भारत का पहला स्वतत्रता सग्राम होने पर भी उसकी नीव तो बहुत पहले सन्यासी विद्रोह के रूप मे पड़ चुकी थी जिसकी प्रेरणा स्रोत थी रानी देवी चौधरानी और महारानी तपस्विनी। उस के बाद प्रथम स्वतत्रता सग्राम मे बहादुरशाह ज़फर की बेगम ज़ीनतमहल और लखनऊ मे नवाब वाजिदअली शाह की बेगम हजरतमहल की राजनीतिक कुशलता और बहादुरी की प्रशसा जिनती भी करे कम ही है। उसी समय की झासी की रानी लक्ष्मीबाई तो भारतीय वीरांगनाओ के आदर्श का प्रतिमान बनकर आज भी समाज की प्रेरणास्रोत बनी हुई है।

लार्ड कर्जन के समय मे हुए बगाल के विभाजन का विरोध करते हुए 16 अक्तूबर, 1905 को 'राष्ट्रीय शोक दिवस' के रूप में मनाकर महिलाओ ने घरो मे चूल्हे बद किए और पुरुषो का उत्साह बढ़ाने के लिए उन्हें राखी बाधी और सड़को पर उतर कर सरकारी निशेधाज्ञाओं का धिक्कार करके 'वदेमातरम्' का उद्घोष किया।

उस समय गांव-गाव मे, घर-घर महिलाएँ चरखा चलाकर, राष्ट्रीय फण्ड मे पैसा और आभूषण दान देकर स्वतन्त्रता के आदोलन मे भाग लेती रही। सरोजिनी बोस, कुमारी कुमुदिनी मित्रा, श्रीमती जे के गागुली, रवीद्रनाथ ठाकुर की बहन स्वर्णकुमारी देवी जैसी महिलाओं ने बंगाल में, पजाब मे सुशीला देवी, सरला देवी चौधरी, आर्य समाज की सेविका स्वर्णकुमारी आदि ने आंदोलन का नेतृत्व किया। लाहौर के बैरिस्टर रोशनलाल की पत्नी हरदेवी ने 'भारत-भगिनी' नामक हिंदी पत्रिका का संपादन करके आदोलन मे भाग लिया। बगाल की सरलादेवी चौधरी ने जगह-जगह पर 'लक्ष्मी-भडार' खोलकर स्वदेशी आंदोलन को लोकप्रिय बनाया।

सन् 1893 मे भारत आई एनी बेसेंट ने धर्म, शिक्षा, समाजसेवा और राजनीति के क्षेत्रों मे ऐतिहासिक योगदान दिया। मौलाना आज़ाद को शिक्षा के क्षेत्र मे प्रेरणा देनेवाली महिला है एनी बेसेट। उन दोनो ने भी शिक्षा को जन-जागरण और आत्मज्ञान का एक महत्वपूर्ण माध्यम माना है। एनी बेसेट के नेतृत्व मे अनेक विद्यालय और महाविद्यालय स्थापित हुए जिनमें उनसे स्थापित सेंट्रल हिदू स्कूल कालांतर मे पडित मदनमोहन मालवीय द्वारा बनारस हिदू विश्वविद्यालय के रूप में विकसित हुआ। आजकल हर एक देश महत्वपूर्ण मामलों में विश्वमत जुटाने में लगा है। लेकिन एनी बसेट ने उसका महत्व उसी जमाने मे समझ लिया और 'होमरूल' की माग को लेकर विश्वमत पाने के लिए कई विदेश यात्राएँ की। डॉ एनी बसेट का व्यक्तित्व और कृतित्व अनेक स्त्री-पुरुषों के लिए प्रेरणा-स्रोत बना। वे उस समय की इतनी प्रभावशाली नेता थी कि सन् 1917 मे काग्रेस ने सर्वसम्मति से उन्हें अपना अध्यक्ष बनाया। संक्षेप मे एनी बेसेट पश्चिम और पूर्व के बीच, विज्ञान और अध्यात्म के बीच और लोकमान्य तिलक और गांधीजी के बीच समन्वय की एक महत्वपूर्ण सेतु थीं। नव भारत के निर्माण मे एनी बेसेट की भूमिका उससे स्थापित कई संस्थाओ से अधिक मालूम पड़ती है। 'कामन बिल', 'न्यू इंडिया', 'स्त्री धर्म', रोशनी' जैसी पत्रिकाओ के द्वारा 'विमेन्स इडियन ऐसोसिएशन', 'भारत स्त्री मंडल', 'भगिनी समाज', 'यूनिवर्सिटी विमेंस एसोसिएशन', 'आल इडिया विमेस कॉन्फ्रेस' आदि सस्थाओ के द्वारा उस समय महिलाओं ने समाज मे नए परिवर्तन लाने के लिए कई महत्वपूर्ण कार्य किए।

भारतीय स्त्रियो को मताधिकार मिलने के उपरांत सन् 1926 में महिलाएँ विधान सभाओ की सदस्य, उपाध्यक्ष बनकर धीरे-धीरे प्रातीय और केद्रीय मन्त्रिमंडल में स्थान पाकर देश की रूपरेखाओ को निर्धारित करने मे मददगार बनी।

स्वतत्रता के आदोलन के समय विदेशो मे रहकर भारत की आज़ादी के लिए कार्य करनेवाली भारतीय महिलाओ मे मैडम भीकाजी कामा का नाम अग्रगण्य है। वे अपने समकालीन श्यामजी कृष्ण वर्मा, हरदयाल, विनायक दामोदर सावरकर जैसे प्रमुख राष्ट्रभक्तो की प्रेरणा-स्रोत थी। देशभक्ति के साथ-साथ समाज सेवा के प्रति वे अत्यंत आसक्त थी। मुम्बई मे भयानक प्लेग के दौरान राहत कार्यो मे उन्होने दिन-रात एक कर डाला। उन्होने भारत के स्वतत्रता-सग्राम के भीष्म पितामह माने जाने वाले दादाभाई नौरोजी के निजी सचिव के रूप मे काम करते हुए जर्मनी, फ्रास, स्काटलैड की यात्राएँ की। जर्मनी मे आयोजित विश्व-प्रतिनिधियो की एक सभा मे भाषण देते हुए मैडम कामा ने सभी को प्रभावित किया और पहली बार राष्ट्रीय झंडे का प्रारूप भी उन्होने उसी समय बनाया। वीर सावरकर व अन्य क्रातिकारियों के कार्यो को विदेश और भारत मे धन व अन्य सहायता देने का साहसी कार्य मैडम कामा लगातार करती रही।

इस प्रकार भारत को अपनी कर्मभूमि मानकर डॉ. एनी बेसेट ने और विदेशो मे रहकर मैडम कामा ने भारतीय स्वतत्रता सग्राम मे अभूतपूर्व योगदान दिया।

आज़ाद हिंद फौज मे महिला रेजिमेट के कामो को देखने पर किसी को भी भारतीय महिला का वीरोचित रूप प्रकट हो जाता है। मार्च 1943 मे इडियन इडिपेडेस लीग में महिला गुट की 'रानी झॉसी रेजिमेंट' के नाम से शुरूआत हुई। जिसमे श्रीमती एम के. चिदबरम, सुश्री सरस्वती, डॉ लक्ष्मी स्वामीनाथन ने अपने वीरोचित कार्यो से सबको मंत्रमुग्ध कर दिया। लीग की महिलाओं ने मलाया थाइलैंड, बर्मा आदि जगहो पर व्यापक दौरा कर फड जमा किया, लोकमत तैयार किया और लीग की शाखाएँ खोल दी। इस रेजिमेण्ट को मोर्चे पर लड़ने का मौका नही मिलने पर भी वे महिलाएँ पूरी तरह प्रशिक्षित हुई और कई पुरुषो के लिए भी प्रेरणास्रोत बनी।

असहयोग आदोलन के समय मे देशबंधु चित्तरजन दास की पत्नी बासंती देवी और बहन उर्मिला देवी ने खद्दर बेचने और विदेशी वस्तुओ के बहिष्कार के लिए व्यापक कार्य किए। गाधीजी की सफलता के पीछे उनकी पत्नी कस्तूरबा गाधी को कौन भूल सकता है? कस्तूरबा के साथ डाडी बहन पटेल, मीठू बहन पेटिट, मणिबेन पटेल, सरला देवी, मृदुला साराभाई आदि अनेक स्वयसेविकाएँ आदोलन मे जुट गई। पजाब मे उस समय लाला लाजपतराय की पत्नी राधा देवी, पार्वती

देवी, मुहम्मद अली-शौकत अली की मा बी अमन, शामदेवी आदि महिलाओं ने धूम मचा दी। लाहौर में लाडो रानी जुत्शी, तारा देवी और झेलम मे पुष्पा गुजराल आदि जुलूसो और सभाओ मे सक्रिय भाग लेकर सब के लिए प्रेरणा की स्रोत बनी रही। जब मोतीलाल और जवाहरलाल नेहरू जेल मे थे उस समय महिलाओ और युवको को सगठित करने के लिए जवाहरलाल की पत्नी कमला नेहरू आगे आई। जब वह गिरफ्तार हुई तब प्रयाग की महिलाओ को इतनी प्रेरणा मिली कि वे बड़ी सख्या में उनके द्वारा स्थापित 'सेविका संघ' में शामिल हुई। नेहरू जी की बूढ़ी मा स्वरूपरानी नेहरू और अन्य बहनें विजयलक्ष्मी पंडित, श्यामकुमारी नेहरू, उमा नेहरू भी आगे बढ़ कर जनता मे देशभक्ति की भावना भरने मे सजग रही। लखनऊ में बेगम अब्दुल कादिर, दिल्ली मे स्वामी श्रद्धानद की पुत्री वेद कुमारी और मेमोबाई, नागपुर मे अनुसूया बाई, जबलपुर मे हिंदी की सुप्रसिद्ध कवयित्री सुभद्रा कुमारी चौहान ने महिलाओं को सगठित कर जुलूस निकालने का और सगठित करने का साहसी कार्य किया।

सन् 1930 में प्रसिद्ध दाडी यात्रा के दौरान जब गाधी जी जैसे प्रथम श्रेणी के नेता गिरफ्तार हुए तब सरोजिनी नायुडू ने उस आदोलन को बखूबी चलाया और स्वयं गिरफ्तार हो गई। उस समय के सत्याग्रह आदोलन में महिलाओं की आशातीत भागीदारी भारत के इतिहास मे एक अभूतपूर्व नजारा था। देश भर मे 'सेविका सघ' स्थापित हुए और जगह-जगह पर पिकेटिंग बोर्ड बनाए गए। सन् 1930-31 के आदोलन काल में कुल मिलाकर लगभग एक लाख व्यक्ति जेल गए, जिनमे महिलाओं की संख्या लगभग सत्रह हज़ार थी। ब्रिटिश सरकार जो अब तक भारत की महिला को निरक्षर, पिछड़ी हुई और असंगठित मानती थी वह उसके इस साहसी रूप से चौक गई। गांधीजी ने भी उनके बारे मे लिखा—***'भारतीय महिलाओं का यह साहसपूर्ण कार्य इतिहास में स्वर्णाक्षरों में लिखा जाएगा।'***

सन् 1937 मे जब प्रांतीय मत्रिमडलो का गठन हुआ तब सयुक्त प्रात से भारत की प्रथम महिला मंत्री के रूप मे विजयलक्ष्मी पडित चुनी गई। पांच महिलाएँ संसदीय सचिव बनी। अनुसूया बाई काले मध्य प्रांत मे, सिपाई मलानी सिध में और कुदसिया बेगम संयुक्त प्रात मे डिप्टी स्पीकर बनीं। बेगम शाहनवाज पंजाब मे और हसा मेहता मुम्बई मे पार्लिमेटरी सेक्रेटरी चुनी गई।

सन् 1942 के भारत छोड़ो आदोलन के समय अरूणा आसफ अली के साहस को कोई नही भूल सकता। भारत का झडा फहरा कर उस समय उस ने जो साहस दिखाया वह कई लोगो के लिए प्रेरणाप्रद बन गया। डॉ. राममनोहर लोहिया, अच्युत पटवर्धन, डॉ जयप्रकाश नारायण जैसे नेताओ के साथ मिलकर उसने हर प्रकार की शारीरिक, मानसिक और आर्थिक कष्ट सहते हुए कर्मठता और तेजस्विता के साथ आंदोलन को अपना योग दिया और '1942 की रानी झासी' कही गई। इस समय सुचेता कृपालानी, राजकुमारी अमृत कौर, मातगिनी हाजरा, बहुरिया रामस्वरूप देवी, सुभद्रा जोशी, पूर्णिमा बनर्जी, डॉ सुशीला नायर, अम्मू स्वामीनाथन, उषा मेहता, इदिरा गाधी आदि ने इस आदोलन का सफलतापूर्वक नेतृत्व किया।

विजयलक्ष्मी पंडित ने आगे बढ़कर उत्तर प्रदेश मत्रिमडल मे, सयुक्त राष्ट्र संघ के भारतीय शिष्टमंडल में, युनाइटेड नेशस की असेंबली मे, रूस और अमेरीका मे जो महत्वपूर्ण कार्य किए उनसे हमे पता चलता है कि भारत की महिलाओ का इस राष्ट्र के निर्माण मे क्या योगदान रहा।

स्वतंत्र भारत मे राजकुमारी अमृत कौर, मीराबेन, स्वामी श्रद्धानद की नातिन सत्यवती, दादा भाई नौरोजी की पोती खाशीर्द नौरोजी, मनमोहिनी सहगल, मेमो बाई आदि महिला नेत्रियो ने अपने-अपने क्षेत्रो मे महत्वपूर्ण कार्य किए। यहां उल्लेखनीय महिलाओं मे उषा मेहता एक हैं जिसने शिक्षा और समाज सेवा को अपना कार्य क्षेत्र बनाकर अनेक संस्थाओं की स्थापना की।

राष्ट्रनिर्माण मे श्रीमती इदिरा गॉधी की भूमिका पर एक विस्तृत निबंध ही लिखा जा सकता है। जिस समय श्रीमती गॉधी सत्तारूढ़ हुई थीं उस समय देश की राष्ट्रीय एवं सामाजिक स्थिति अत्यंत डंवाडोल थी। एक ओर महगाई और दूसरी ओर देश की विघटनकारी प्रवृत्तियां देश को सर्वनाश की ओर ले जा रही थी। विभिन्न धर्मावलबियों के बीच सहिष्णुता की कमी और सामाजिक दोषो के कारण सर उठानेवाली साप्रदायिक दंगों को कुचल देने मे श्रीमती गॉधी ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। पूर्वोत्तर क्षेत्र में आदिवासियो और गैर आदिवासियों के मध्य बढ़ती शत्रुता को हटाकर देश को एकता के रास्ते पर लाने मे उसने सफल काम किए। पंजाब की समस्या को हल करने मे उन्होंने जो साहस दिखाया उसकी प्रशंसा और साथ ही साथ आलोचना का भी सामना किया, लेकिन अपने कर्तव्य से मे मुड़ी नही। इसी के कारण उनके जीवन की समाप्ति भी हुई। लेकिन पजाब की समस्या को हल करने में वे सफल हुईं।

शिक्षा के मामले मे श्रीमती गाँधी जी मौलाना साहब से अधिक प्रभावित थी। उन दोनों का मानना था कि हमारी शिक्षा पद्धति मे अनेक खामियो के बावजूद इसमें राजनैतिक चेतना को उद्‌बोधन करने का और पुराने दकियानूसी समाज की दमघोटू रूढ़ियों से मुक्त करने के लिए इच्छा पैदा करने का प्रयास किया गया है।

बैको के राष्ट्रीयकरण जैसे क्रातिकारी कृत्यों के द्वारा उन्होने समाजवादी समाज की स्थापना और सामाजिक न्याय की स्थापना के लिए जो कदम उठाए वे नव भारत निर्माण मे कितने सहायक हुए यह इतिहास ही बताएगा।

इधर समाज-सेवा के माध्यम से राष्ट्रनिर्माण मे हाथ बटानेवाली स्त्री-मूर्तियों मे सबसे पहले उल्लेखनीय हैं मदर टेरेसा। करुणा और ममता की मूर्ति मदर के समान समाजसेवा मे अपने पूरे जीवन को लगानेवाली हस्ती सारी दुनिया मे दूसरी कोई नही है। कोढ़ियों की सेवा मे अपना सारा जीवन लगाकर तिरस्कृत और उपेक्षित लोगो की उसने जो सेवा की वह मामूली सेवकों के बस की बात नही है। नोबेल पुरस्कार जैसे सर्वोत्तम उपाधियॉ उसकी सेवा को सराहते हुए उसके यहां पहुंची तो उसका मतलब यह भी है कि भारत की स्त्री जाति को मिले सर्वोत्तम पुरस्कार भी है ये।

महिला-विकास में मौलाना आज़ाद का योगदान

मौलाना साहब ने देखा है कि भारत के पितृ-सत्तात्मक समाज में परिवार मुख्यत· पैतृक होता है, जो लैगिक असमानता को पोषित करता है। शिक्षा के अभाव में महिलाओ के प्रति हिसा विभिन्न रूपों मे प्रकट होती है। लैगिक समानता के सिद्धांत भारतीय सविधान की प्रस्तावना के मूल अधिकारों, मूल कर्तव्यो तथा नीति निदेशक तत्वों मे शामिल होने पर भी उनका सही तरीके से पालन नहीं हो रहा है। इसलिए उन्होने स्त्री-शिक्षा पर ज़ोर दिया। भारत के प्रत्येक नागरिक का यह मौलिक कर्तव्य है कि वह महिलाओ के प्रति अपनाई जा रही अपमानजनक प्रथाओ को छोड़े और समाज मे वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानवता और जानकारी प्राप्त करके सुधार की भावना को विकसित करे। मौलाना आज़ाद राजनैतिक व धार्मिक मामलों मे क्रातिकारी विचार अपनाते थे। जुलाई 13, 1912 में उन्होंने कलकत्ता से अल-हिलाल पत्रिका का संचालन शुरु करके अपने विचारो द्वारा जनता में क्राति

मचाई। लेकिन उस समय आज़ाद के विचारो को उतनी मान्यता नही मिली जितनी मिलनी चाहिए थी क्योकि सबने उन्हे काग्रेस दल के एक सदस्य के रूप मे माना, न कि एक सच्चे सुधारवादी या स्त्रीवादी नेता के रूप में। उन दिनो साधारण जनता की धारणा थी कि अंग्रेज सरकार मुसलमानो को स्वतत्रता-सग्राम रोकने के लिए उपयोग कर रही है। लेकिन आज़ाद ने अपने कारनामो से उसे गलत साबित किया। मौलान आज़ाद ने समझा कि शिक्षित नारी अपने साथ-साथ पूरे परिवार को शिक्षित बना सकती है। इसलिए उन्होने अपने धर्म के कुछ मिथक-तत्वो से बाहर आकर नारी शिक्षा पर अधिक दृष्टि डाली। स्वतत्र भारत के प्रथम शिक्षा मत्री होने के नाते उन्होंने अपने पर बड़े उत्तरदायित्व का अनुभव किया और अपने परवर्ती मत्रियो के लिए एक आदर्श मार्ग की स्थापना की। राष्ट्र मे स्त्रियो के महत्वपूर्ण स्थान को उन्होने अच्छी तरह से समझा कि उन्हे सम्मानित जीवन व्यतीत करने के योगय बनाना चाहिए ताकि आवश्यकता पड़ने पर उन्हे परावलम्बी और निराश्रित न बनना पड़े। व्यक्ति के दृष्टिकोण को व्यापक बनाने के लिए, उसके सुशील व्यवहार के लिए, उसमे विवेक शक्ति के उचित विकास के लिए शिक्षा की अधिक आवश्यकता होती है। इस प्रकार का विशाल दृष्टिकोण अपना कर उन्होने भारतीय महिलाओ को राष्ट्र-निर्माण का सही भागीदार बनाया।

जब शासन ने शिक्षा पद्धति में सुधार करने का काम अपने हाथ मे लिया तब मौलाना साहब ने माना कि इस क्षेत्र में सबका योगदान आवश्यक है। मौलाना आजाद साहब का योगदान अधिकतर शिक्षा के क्षेत्र में है तो यह सदेह उत्पन्न हो सकता है कि राष्ट्र निर्माण का उससे क्या सबध है। यहॉ हमे इस बात को नही भूलना चाहिए कि राष्ट्र निर्माण के कार्यक्रम में अधिक प्रभावशाली शिक्षा ही है।

सामाजिक एव व्यक्तिगत जीवन मे शिक्षा का महत्व अतुलनीय है। मनुष्य और समाज के स्वरूप परिवर्तन मे शिक्षा का महत्वपूर्ण अभिकरण है। शिक्षा के माध्यम से ही वैयक्तिक और सामाजिक जीवन की प्रतिस्थापना की जाती है। राष्ट्र निर्माण मे शिक्षा के इस महत्वपूर्ण स्थान को दृष्टि मे रखते हुए मौलाना साहब ने शिक्षा के राष्ट्रीयकरण की मांग की है। राष्ट्रीयकरण से उनका तात्पर्य यह है कि शिक्षा व्यक्तिगत इजारेदारी के क्षेत्र से निकाली जाए और वह समाज के प्रतिनिधियो को सौप दी जाए। उनका मानना है कि शिक्षा पर राज्य और समाज का नियत्रण हो और देश के आदर्शो के अनुरूप शिक्षालयो का सगठन हो और शिक्षा उन्ही आदर्शो

की स्थापना करे जो देश के लिए हितकर हो। लेकिन वे शिक्षा के सरकारीकरण अथवा शिक्षा पर सरकारी यंत्रो या एक भाग विशेष के नियत्रण से विमुख थे।

स्वतत्रता आदोलन के समय महिला सगठनों के प्रारभ और गांधीवादी राजनीति के साथ-साथ अन्य जिन आंदोलनो ने महिलाओं के विकास पर बल दिया है उनमें खिलाफत आंदोलन एक है। इसके प्रमुख अनुयायी व प्रचारक थे मौलाना अबुल कलाम आज़ाद। इस आदोलन ने महिलाओं को एक महत्वपूर्ण मोड़ पर ला खडा किया। इन सस्थाओं के पीछे यही भावना थी कि लोकतत्र के बिना और महिलाओ की बराबरी के बिना आज़ादी अर्थहीन है। खिलाफत आदोलन ने राष्ट्रवाद के उस उफान में हिदुओं और मुसलमानो को साथ-साथ सोच-समझकर चलने को बाध्य किया। इस आंदोलन के द्वारा मौलाना साहब अपना लक्ष्य पा सके।

मौलाना आज़ाद के विचारों को परखने के बाद यह स्पष्ट रूप से ज्ञात होता है कि ये पारंपरिक मुस्लिम शिक्षा विधान के विरोधी थे जिसमे महिलाओ की शिक्षा के लिए स्थान लेशमात्र रहा। उनका उपनाम 'आज़ाद' पारंपरिक इस्लामी रीति-रिवाजो से अपने आप को मुक्त मानते हुए लिया गया है।

कुछ लोगो का मानना है कि मौलाना आज़ाद के समय मे शिक्षा के क्षेत्र में कोई क्रातिकारी परिवर्तन नही हुआ। उन्हे यह समझना होगा कि शिक्षा समाज का एक उपाग मात्र है, इसलिए जब तक समाज में क्रांतिकारी परिवर्तन नही आते तब तक शिक्षा के क्षेत्र में क्रातिकारी परिवर्तन लाना किसी के लिए साध्य नही है। वैसे तो शिक्षा मत्री होने के नाते उन्हे पूरे मंत्रिमंडल की सूचनाओं को भी ग्रहण करना चाहिए। उस समय देश के सामने शिक्षा से भी अधिक गभीर सामाजिक, राजनैतिक और आर्थिक समस्याएँ थीं जिन्हे हल करने मे पूरा शासन लगा हुआ था। फिर भी अपनी सीमित परिधि में उन्होंने जो महत्वपूर्ण कदम उठाए उनके लिए वे हमेशा प्रशंसा के पात्र बने रहेंगे। उस समय के देश की परिस्थितियो को दृष्टि मे रखने के बाद कोई भी मौलाना साहब के निर्णयों में गलती नहीं पाएगा। उस समय देश विभाजन के कारण जो नाजुक स्थिति पैदा हो गई, उस स्थिति में राष्ट्र-निर्माण एव जातियो के समतुल्य पर अधिक ज़ोर दिया जा रहा था। देश का शासन पश्चिमी शासको के हाथो से केवल पश्चिमी सभ्यता से प्रभावित लोगो के हाथो मे आई थी। इसलिए समाज में किसी प्रकार के क्रातिकारी परिवर्तन नही हुए। शासको ने सुधारवादी एवं नरमवादी विधान को अपनाया। ऐसी स्थिति मे शिक्षा के क्षेत्र में भी

कोई क्रांतिकारी परिवर्तन की आशा नही की जा सकती। शिक्षा की इस स्थिति के लिए हम किसी की निदा नही कर सकते क्योंकि उस समय की स्थिति मे कोई भी वही कर सकता था। स्वतंत्रता-प्राप्ति के पहले डॉ. राधाकृष्णन की अध्यक्षता मे सामान्य शिक्षा की नीति-नियमो पर जो कमिटी बनाई गई उसकी सूचनाओं का ही सही तरह से पालन अब तक नहीं हो सका तो हम 5-10 सालो में किस बड़े परिवर्तन की आशा कर सकते है ? मौलाना आज़ाद के समय में किए गए महत्त्वपूर्ण निर्णयो में शिक्षा को सयुक्त सूची मे रखना एक है जिससे प्राथमिक स्तर पर राज्यो का और उच्च शिक्षा में केद्र का उत्तरदायितव बढ़ेगा। उस समय के प्रधानमत्री जवाहरलाल नेहरू प्राथमिक शिक्षा से अधिक उच्च और विश्वविद्यालयीय शिक्षा पर ज़ोर देते थे, लेकिन मौलाना बुनियादी तौर पर प्राथमिक शिक्षा पर ज़ोर देते थे। जो भी हो मौलाना की स्फूर्ति का कोई भी पूरा अदाज नही लगा सकता।

उपसंहार

भारत मे नारी की स्थिति और गति का वैदिक काल से लेकर आधुनिक काल तक आकलन और अवलोकन करने के पश्चात् हम कह सकते हैं कि पुरुष के समकक्ष उसका दर्जा न होने पर भी अपने सीमित क्षेत्र में उन्होने जो काम किए वे पुरुष भी नही कर सकते। अगर स्त्री मे कोई अक्षमता है तो उसकी शारीरिक अक्षमता हो सकती है लेकिन मानसिक रूप से वह पुरुषों से कई कदम आगे थी, है और आशा है कि रहेगी।

उपर्युक्त विवरण से हमें यह स्पष्ट हो रहा है कि भारत के नव-राष्ट्र-निर्माण मे महिलाओ का क्या योगदान है और महिलाओ का समर्थन करने में तथा उनकी सामाजिक स्थिति सुधारने मे मौलाना साहब का क्या योगदान है। लेकिन अफसोस की बात यह है कि आज भी समाज मे महिलाओं के प्रति बहुत अन्याय हो रहा है और उसे असमानता का शिकार होना पड़ रहा है। हाल ही मे महिला और बाल विकास विभाग द्वारा संकलित किए गए आकड़ो से यह पता चलता है कि प्रति 54 मिनट मे एक बलात्कार, प्रति 26 मिनट मे महिलाओ को परेशान करने का एक मामला, प्रति 43 मिनट में एक अपहरण, प्रति 51 मिनट पर महिला से छेड़छाड़, प्रत्येक एक घंटे 42 मिनट मे दहेज के कारण हत्या और प्रत्येक साल

मिनट मे महिलाओ के प्रति एक अपराधिक मामला घटित होता है। यह स्थिति किसी भी समाज के लिए लज्जा की बात है। ऐसी घटनाएँ हमारे पूर्वजो के प्रति हमारी अवहेलना की द्योतक हैं। इसलिए हमें उनसे बचकर रहना चाहिए और अपने पूर्वजों के आदर्शों को साकार बनाने में मदद करनी चाहिए।

राष्ट्र निर्माण में महिलाओं का योगदान : संदर्भ मौलाना आज़ाद

गणेश अमित अयोध्या

शरीर को जीवित रखने के लिए प्राण चाहिए। इसी तरह देश के उज्ज्वल भविष्य और निर्माण के लिए अच्छा नागरिक होना जरूरी है। भारत ने ऐसे बहुत से अच्छे नागरिको को जन्म दिया है जिन्होंने स्वतत्रता सग्राम के आकाश मे तारों की तरह प्रवेश किया। जिन्होने अंग्रेज सरकार के पजो से भारत को स्वतंत्र करने के लिए कठिन-से-कठिन सघर्ष झेला।

देशप्रेमी और देश सेवक नागरिक अपने देश की अखंड शक्ति होते है। इसी तरह भारत ने भी अपनी स्वतत्रता के समय ईश्वर से एक ऐसी शक्ति प्राप्त की, जिन्होंने भारत को उस शिखर तक पहुँचाया जहॉ से भारत के उज्ज्वल भविष्य का विकास हुआ। मौलाना अबुल कलाम आज़ाद भारत के देशभक्त और महान क्रांतिकारी के साथ-साथ एक देशसेवक नेता भी थे।

मौलाना अबुल कलाम आज़ाद का जन्म स. 1888 में मक्का मे हुआ था। अरबी उनकी मातृभाषा थी। अपने विद्वत पूर्वजों के कुल मे मौलाना भी एक विद्वान थे। मौलाना बड़े-बड़े विद्वानो की बातों पर बहुत प्रभावति होते थे, और हमेशा उन पर मनन करते थे। बचपन से ही महान विद्वानो की सगत से प्रभावित मौलाना के मन में ज्ञान और विद्या की अनन्त धाराएँ बहने लगी थी। 5-9 वर्ष की अवस्था मे उन्होंने इस्लाम के महान ग्रथ 'कुरान' को पूरी तरह से कठस्थ कर रखा था।

मौलाना खैरूद्दीन (मौलाना के पिता) को अपनी मातृभूमि भारत से बहुत लगाव था। और फिर 1895 में इलाज के लिए वे परिवार सहित कलकत्ता आकर

रहने लगे। उसी समय से मौलाना की शिक्षा-दीक्षा आरभ हुई। शुरू में ईश्वर का नाम लेकर शिक्षा के क्षेत्र पर अनेक प्रगति की, जैसे की कम उम्र मे शिक्षा समाप्त कर अध्यापन भी करने लगे थे। भारत मे मौलाना ने अपने पिता और कई महान् विद्वानों से अरबी, फारसी और उर्दू भाषा का भी पठन-पाठन किया। इसके साथ-साथ कितनी महान् कृतियो को भी अरबी से उर्दू और फ़ारसी में अनुवाद किया, जैसे मौलान मुहम्मद हुसैन का महान कार्य "अब-ए-हयात", फारसी मे और मौलान यमी का "नफातुलून्स"। मौलाना अनेक पत्रिकाएँ पढ़ा करते थे और उस पर अपने विचार लेख के रूप मे लिखते थे। पढ़ाई से उन्होंने अपनी सोच-विचार की धारा और बढ़ाई। इसी तरह 1899 में मौलाना, इमाम ग़ज़ाली का जीवन वृतांत लिखना शुरू किए और साथ-साथ "तिब्ब" (औषधि विज्ञान) की पढ़ाई भी, लेकिन दुर्भाग्य से ये दोनों कार्य अपूर्ण रहे। बचपन से ही मौलाना को किताबें पढ़ने में बहुत रूची थी। इसीलिए कठिन-से-कठिन किताबें पढ़ते थे। मौलाना ने कम उम्र में कविता भी लिखनी शुरू कर दी थी। यह कैसे और किस तरह काव्य की भावना दिल मे बस गयी उन्हे स्वयं पता नहीं चला। अब्दुल वहीद् खान और मिर्जा ग़ालीब के गजलो से मौलाना हमेशा प्रभावित रहते थे। उनकी गजलों को प्राय: सुनकर मौलाना के भीतर कितने शब्द प्रकट होते थे और वह ग़ज़ल लिखने लगते थे, जिसकी वह खुद कल्पना नही कर पाते थे। 1903 तक मौलाना की ग़ज़ले प्रकाशित हुई। 1900 से 1902 तक मौलाना अनेक सघठनों, सम्मेलनो और गुप्त संगोष्ठियो में भाग लिया करते और अपने भाषणों से जनता को आकर्षित करते थे। 1903 मे जब मौलाना की अपनी पढ़ाई समाप्त नही हुई थी तो उन्हे एक वरिष्ठ छात्र, कवि, लेखक, अनुवादक और एक कुशल वक्ता होने का बहुत मान-सम्मान दिया गया था। उनके लेख और ग़ज़ल "अरमाघन-ए-फारूख़, अशान-उल-अख़्तर, नैरग-ए-आलम, अल-मिशाह, मराके-ए-आलम, माखज़न, खडग-ए-नज़र, अलपंच, एदवर्ड ग़जेड और तुफ़ा-अहमेदिआ", जैसी पत्रिकाओ मे प्रकाशित हुए।

1899 मे "नैरग-ए-आलम" और 1900 में "अल-मिशाह" के बाद 1902 मे "माखज़ान" मे एक लेख "डी आर्ट आफ जूर्नलेसम" का प्रकाशन किया जिससे मुनशी नौबत राई ने प्रभावित होकर मौलाना को "खडंग-ए-नज़र" का सम्पादक सहयोगी बना दिया था। इसके साथ-साथ मौलाना का पहला प्रकाशन "एला-उल-हक" हुआ था। मौलाना इस्लाम धर्म के बहुत बड़े प्रेमी थी और मुस्लिम होने पर

उन्हे बहुत गर्व था। अपने मुस्लिमों को सही मार्ग दिखाने के लिए उर्दू भाषा का सहारा लिया था। खुद की साधना से एक कुशल पत्रकार बनने के बाद मौलाना ने 20 नवम्बर 1903 से मई 1905 तक कलकत्ता से "लिसान-अल-सिदक्के" का प्रकाशन शुरू किया। वह अपने पाठको को हमेशा मुस्लिम समाज सुधार, उर्दू भाषा और साहित्य और महत्त्वपूर्ण शैक्षिक कार्यो के प्रकाशन से प्रसारित करते थे। अक्टूबर 1905 से मार्च 1906 तक मौलाना शिब्ली ने इस्लामिक सास्कृतिक केद्र, नादवा मे, मौलाना की प्रगति देखकर "अल-नादवा" का सपादक बनाया। 1906 से जुलाई 1908 तक अमृतसर से शैख गुलाम मुहम्मद के "वकील" अकबार के लिए मौलाना ने काम किया। भाई की मृत्यु के पश्चात्, 1907 में मौलाना ने जुलैखा बेगम से विवाह किया। समय-समय पर अपनी पत्रकारिता जारी रखी जैसे "दर-उल-सुलनत" मे।

पिता मौलाना खेरूद्दीन की मृत्यु के बाद 13 सितम्बर 1908 को मौलाना अनेक जिम्मेदारियों से मुक्त होकर अरबी देशो के यात्रा पर निकले। यही वह शुरूआत थी जहॉ मौलाना राजनैतिक क्षेत्र पर अपना योगदान कर रहे थे। ईराक से ईजिप्ट, तुरकी और ईरान में इस्लामी नेताओ और क्रातिकारियों से मित्रता का सम्बध बढ़ाया। अपने इन मित्रों से बातें कर मौलाना को "आज़ाद" का खिताब मिला और स्पष्ट हुआ और 1909 में भारत वापस आकर स्वतंत्रता आन्दोलन मे जुट गये। 1910 में उन्होने भारत के सभी क्रांतिकारियो और विद्वानो से सम्पर्क रखा। साहित्य और शैक्षिक कार्यो की अपेक्षा भारतीय मुस्लिमो और हिदुओं की भलाई के लिए नित्य सोचते रहे। मौलाना कभी पक्षपाती नही थे बल्कि वह यह चाहते थे कि हिदू और मुस्लिम साथ-साथ, कदम मिलाकर, स्वतंत्रता सग्राम मे अंग्रेजी शासन को समाप्त करे। इसीलिए जनमत तैयार करने के लिए 1912 मे "अल-हिलाल" का प्रकाशन शुरू किया। इसकी सफलता से बहुत लोग प्रभावित हुए। "अल-हिलाल" में कुरान के विषयों से अधिक अंग्रेजो के विरूद्ध लिखे जाते थे, इसी लिए कभी-कभी इनकी ज़मानत भी हुई। 1914 तक अंग्रेज सरकारी दबाव के कारण "अल-हिलाल" कारनामा को बंद करना पड़ा और मौलाना पर भी कड़ी नज़र रखी गयी। लेकिन मौलाना ने कभी हिम्मत नहीं हारी। बड़े-से-बड़े कार्य संतोष और धैर्य के साथ अपने ऊपर लेते थे, जैसे मौलाना शिब्ली का "दरूल-मुसानिफ़िन"। "अल-हिलाल" के बाद 12 नवम्बर 1915 से 31 मार्च 1916

तक "अल-बलाग" प्रकाशित हुआ। प्रकाशन का नाम बदला लेकिन मौलाना का विचार और हिम्मत नहीं। "अल-बलाग" भी "अल-हिलाल" की तरह इस बार फिर क्राति का स्वर गुंजाया। इस पर भी अंग्रेज सरकार ने फिर दबाव डाला। लेकिन इस बार मौलाना को राँची मे (1916) बदी बना लिया गया। उन दिनों मे मौलाना फ़ज्लुद्दीन, ने मौलाना अबुल कलाम आज़ाद के जीवन वृतात पर "तज़कीराह" नामक पुस्तक लिखी। जेल के बाद (26 सितम्बर 1919 मे) राष्ट्र की स्थिति और गम्भीर हो रही थी। इन कठिनाईयों का सामना करने के लिए 18 जनवरी 1920 मे मौलाना पहली बार गॉधीजी से मिले थे।

महात्मा गॉधीजी के साथ उन्होने भारतियों के ह्रदय मे आध्यात्मिक ज्योति जलायी। इन दोनो महानुभावो का मत था कि निसदेह भारतीय लोग अपने धर्म और परम्पराओं का आदर करें लेकिन महत्त्वपूर्ण बात यह है कि अपने देश की स्वतंत्रता के लिए हिदू-मुस्लिम की एकता दृढ़ रखे। मौलाना ने तब फिर एकता और जनमत के लिए 23 सितम्बर 1921 में "पैग़ाम" का प्रकाशन शुरू किया। 20 दिसम्बर 1921 से 6 जनवरी 1922 तक मौलाना को दूसरी बार जेल जाना पड़ा। रिहाई के बाद सितम्बर 1923 मे मौलाना काग्रेस के अध्यक्ष बने, लेकिन एक शर्त पर कि हिदू-मुस्लिम की एकता बनी रहे।

मौलाना राजनीति के कार्य को बड़ी गम्भीरता पूर्वक पूर्ण करते थे। तत्पश्चात् काग्रेस का विभाजन भी हुआ, लेकिन मौलाना अपने कर्त्तव्य पथपर डटे रहे। मौलाना और गॉधीजी ने पूरी तरह से कोशिश भी की इन झंझटो को शात करने के लिए और वे सफल भी हुए। 1940 में भारतीयों को अंग्रेजों की गुलामी करना सहते नही बना और "भारत छोड़ो आन्दोलन" शुरू हो गया। ब्रिटिश सरकार से क्रिप्स मिशन जब आकर गए तो भारतीयो को और निराश होना पड़ा। लेकिन मौलाना ने आन्दोलन जारी रखा और अन्य क्रांतिकारियों के साथ फिर जेल जाना पड़ा। तब 1947 में अग्रेजो ने भारत को अपना पूरा अधिकार देने का निर्णय लिया और सारे बदियों को मुक्त कराया। भारत को स्वतत्रता तो मिल गई ब्रिटिश सरकार से, लेकिन इसके साथ-साथ व देश को विभाजित कर गए। इस पर मौलाना को बहुत चोट पहुँची परन्तु अपने भारतीयो के लिए एक संदेश छोड़ गए कि आज़ाद होने के पश्चात् हमें और शक्ति अर्जित करनी होगी और वो शक्ति है, एकता, आत्मविश्वास और देशप्रेम। इन्ही शक्तियों से मनुष्य दुनिया पर यश और कीर्ति स्थापित करता

है। अब देश का काम सम्भालने के लिए स्वतंत्र भारत के मत्रिमंडल मे प्रथम शिक्षा मत्री मौलाना अबुल कलाम आज़ाद थे। उन्होंने सबसे पहले देश के सभी वर्गो के शैक्षिक पिछड़ेपन को दूर किया और राष्ट्र अखंडता को और बढ़ावा दिया ताकि देश का पूरा विकास हो सके। शिक्षा मत्री के रूप मे उनका असाधारण योगदान साहित्य अकादमी, सगीत अकादमी और ललित कला अकादमी की स्थापना थी। नई भारतीय पीढ़ियो को अपनी कला और सामर्थ प्रदर्शित करने के लिए मौलाना का एक महत्त्वपूर्ण योगदान था। सम्पूर्ण विश्व मे भारतीय सस्कृति कला साहित्य के प्रचार-प्रसार के लिए भारतीय सांस्कृतिक केंद्र स्थापित करने की योजना मौलानाजी की ही देन है। जिसका परिणाम है कि हम प्रवासी भारतवंशी सातसमुद्र पार की दूरियो के बावजूद भारतीय सस्कृति से अपना गहरा रिश्ता अनुभव करते है। भारतीय सस्कृति के साक्षात जीवत रूप मौलाना साहब के सपनों का ही परिणाम है कि विश्व के हम सभी प्रवासी भारतवशी अपने मे भारतीयता, एकता और आत्मीयता की अनुभूति करते है और भौगोलिक दूरियो के बावजूद शक्ति महसूस करते हैं। और फिर 22 फरवरी 1958 मे भारत और भारतवासियो के शुभचिंतक मौलाना अबुल कलाम आज़ाद का देहावसान हुआ। लेकिन उनका देश को समर्पित जीवन और कृतियों का उजाला हम सबके बीच हैं जो भारतीय सास्कृतिक सम्बन्ध परिषद् आज़ाद भवन के द्वारा विश्व के कोने-कोने मे फैल रहा है।

अगर हम अपने सोच-विचार की गहरेपन से मौलाना अबुल कलाम आज़ाद की कृतियो पर विचार करे तो हमे यह प्रेरणा मिलती है कि अगर हम विश्वास और दृढ़ता के साथ कोई कार्य करेगे जो जन के हित में हो तो ईश्वर के कृपा से सब कुछ सम्भव है।